



INFUSION NOTES
WHEN ONLY THE BEST WILL DO

RVUNL

वाणिज्यिक सहायक

भाग - 2

राजस्थान का सामान्य ज्ञान एवं विज्ञान

प्रस्तावना

प्रिय पाठकों, प्रस्तुत नोट्स "वाणिज्यिक सहायक" को एक विभिन्न अपने - अपने विषयों में निपुण अध्यापकों एवं सहकर्मियों की टीम के द्वारा तैयार किया गया है। ये नोट्स पाठकों को "राजस्थान राज्य विद्युत उत्पादन निगम लिमिटेड, राजस्थान (RVUNL)" द्वारा आयोजित करायी जाने वाली परीक्षा "वाणिज्यिक सहायक" की परीक्षा में पूर्ण संभव मदद करेंगे।

अंततः सतर्क प्रयासों के बावजूद नोट्स में कुछ कमियों तथा त्रुटियों के रहने की संभावना हो सकती है। अतः आप सूचि पाठकों का सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

प्रकाशक:

INFUSION NOTES

जयपुर, 302029 (RAJASTHAN)

मो: 9887809083

ईमेल: contact@infusionnotes.com

वेबसाइट: <https://www.infusionnotes.com>

मूल्य :- ₹ 0/-

संस्करण :- नवीनतम

क्र. सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
<u>राजस्थान का इतिहास</u>		
1.	राजस्थान का प्रारम्भिक इतिहास एवं राजपूतों की उत्पत्ति	1
2.	मेवाड़ का इतिहास	2
3.	गुर्जर प्रतिहार वंश	15
4.	चौहान वंश का इतिहास	19
5.	राजस्थान का परमार वंश	25
6.	कछवाहा राजवंश	27
7.	राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह	31
8.	राजस्थान में किसान एवं जनजाति आंदोलन	35
9.	राजनीतिक जागरण	44
10.	राजस्थान का एकीकरण	48
11.	राजस्थान के प्रमुख स्वतंत्रता सेनानी व प्रमुख व्यक्तित्व	53
<u>राजस्थान की कला एवं संस्कृति</u>		
1.	चित्रकला व इसकी विभिन्न शैलियाँ	64
2.	राजस्थान की हस्तशिल्प कला	75
3.	राजस्थान के लोकगीत	83
4.	राजस्थान के प्रमुख नृत्य	88
5.	प्रमुख लोक वाद्य यंत्र	98
6.	राजस्थान के लोक नाट्य	108
7.	भाषा एवं साहित्य	111
8.	राजस्थान में सामाजिक जीवन, मेले एवं त्यौहार	122
9.	स्थापत्य कला शिल्पकला	132
<u>राजस्थान का भूगोल</u>		
1.	राजस्थान - एक सामान्य परिचय	167
2.	राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप	178

3.	मानसून तंत्र एवं जलवायु	188
4.	(अपवाह तंत्र) - नदियाँ, झीलें एवं बाँध	193
5.	प्राकृतिक वनस्पति	208
6.	मृदा	213
7.	कृषि प्रमुख फसलें	217
8.	जनसंख्या	224
9.	खनिज - धात्विक एवं अधात्विक	232
<u>राजस्थान की राजव्यवस्था</u>		
1.	राज्यपाल	242
2.	मुख्यमंत्री और मंत्रिपरिषद्	247
3.	राज्य विधान मण्डल व विधानसभा	253
4.	उच्च न्यायालय	259
5.	स्थानीय स्वशासन एवं पंचायती राज	264
6.	राजस्थान लोक सेवा आयोग (RPSC)	270
7.	राज्य निर्वाचन आयोग	272
8.	महाधिवक्ता	273
9.	राज्य वित्त आयोग	275
10.	राज्य मानवाधिकार आयोग	276
11.	राजस्थान राज्य महिला आयोग	277
12.	राज्य सूचना आयोग	279
13.	लोकायुक्त	281
<u>विज्ञान</u>		
<u>रसायन विज्ञान</u>		
1.	सामान्य परिचय	283
2.	रासायनिक अभिक्रियाएँ और समीकरण	284
3.	परमाणु	285

4.	धातुएं, अधातुएँ एवं उपधातु धातुएं	286
5.	अम्ल, क्षार और लवण	291
6.	कार्बन और इसके यौगिक	293
<u>जीव विज्ञान</u>		
1.	जीव विज्ञान का परिचय	297
2.	ऊतक	300
3.	मानव शरीर के तंत्र	302
4.	आहार एवं पोषण	312
5.	रक्त समूह एवं RH कारक	315
6.	मानव रोग	317
<u>भौतिक विज्ञान</u>		
1.	मापन	325
2.	गति (Motion)	328
3.	बल तथा बल आघात	329
4.	कार्य, शक्ति एवं ऊर्जा	331
5.	दाब (Pressure)	333
6.	ध्वनि (Sound) एवं तरंग (Wave)	334
7.	प्रकाशिकी (Optics)	339
8.	ऊष्मागतिकी (Thermodynamics)	346
9.	विद्युत एवं चुंबकत्व	348

अध्याय - 2

मेवाड़ का इतिहास

- मेवाड़ का गुहिल वंश - मेवाड़ रियासत राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत है, इसे मेदपाट, प्रागवाट, शिवि जनपद आदि उपनामों से जाना जाता है। मेवाड़ का गुहिल वंशी राजघराना एकलिंगजी (शिव) का उपासक था, इसी कारण मेवाड़ के शासक एकलिंगनाथजी को स्वयं के राजा/ईश्टदेव तथा स्वयं को एकलिंगनाथजी का दीवान मानते हैं। गुहिल वंश की कुल देवी बाण माता हैं। मेवाड़ रियासत के सामन्त 'उमराव कहलाते थे। मेवाड़ के महाराणा राजधानी छोड़ने से पहले एकलिंगजी से आज्ञा लेते थे, उसे 'आसकौ' कहते थे। मेवाड़ के महाराणा 'हिन्दुआ का सूरज' कहलाते हैं क्योंकि वो स्वयं को सूर्यवंशी मानते हैं। गुहिल वंश के राजध्वज पर 'उगता सूरज एवं धनुष बाण अंकित है, तथा इसमें उदयपुर का राजवाक्य "जो दृढ़ राखे धर्म को, तिहिं राखे करतार" अंकित है। ये शब्द उनके स्वतंत्रता, प्रियता एवं धर्म पर दृढ़ रहने के संकेत देते हैं। मेवाड़ में 1877 में महाराणा के कोर्ट का नाम बदलकर 'इजलास खास' कर दिया गया था।
- हूणों के पराभव के बाद राजस्थान में जिन क्षत्रिय (राजपूत) वंशों ने अपने राज्य स्थापित किये उनमें गुहिल वंशीय राजपूत प्रमुख हैं। गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने इन्हें विशुद्ध सूर्यवंशीय क्षत्रिय माना है। मेवाड़ राजवंश की स्थापना ईसा की पाँचवीं शताब्दी में गुहिल नाम के एक प्रतापी राजा ने की थी। भारत की आजादी के समय यह विश्व का सबसे पुराना राजवंश था। लगभग 1400 वर्ष की अवधि में 75 शासकों की श्रृंखला ने निर्विघ्न रूप से मेवाड़ पर शासन किया। इस वंश ने शौर्य और पराक्रम की दुनिया में अपना नाम स्वर्ण अक्षरों में लिखा है। मेवाड़ रियासत के प्रमुख शासकों का कालक्रम निम्न प्रकार से है :-

गुहिल वंश (सिसोदिया) के शासक

राजा गुहिल का जीवन परिचय :- विजयभूप ने अपनी राजधानी को अयोध्या से वल्लभीनगर में स्थानांतरित किया। यहाँ इनका शासन सदियों तक रहा। विजयभूप की 6वीं पीढ़ी में शिलादित्य नामक व्यक्ति वल्लभीनगर का शासक बना। राजस्थान के आबू में उस समय परमार वंश का शासन था, जिनकी राजधानी चंद्रावती थी। परमारों की राजकुमारी पुष्पावती के साथ शिलादित्य का विवाह हो जाता है। पुष्पावती के छः पुत्रियाँ होती हैं लेकिन दोनों को एक पुत्र की चाह थी। अगली बार जब पुष्पावती गर्भवती होती हैं तो वह पुत्र प्राप्ति की मन्त्र मांगने के लिए आबू के पास अबुर्दा देवी मंदिर चली जाती हैं। पुष्पावती के आबू जाने के बाद पीछे से वल्लभीनगर पर पड़ोसी राज्य ने आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण में राजा शिलादित्य व बाकी परिवार के लोग

मारे जाते हैं। शिलादित्य के एक सेवक ने आबू पहुंचकर रानी पुष्पावती को इस बात की सूचना दी। पुष्पावती ने अपने पति शिलादित्य की मृत्यु के दुःख में सती होने का फैसला किया लेकिन गर्भावस्था में होने के कारण उनकी सखियों ने ऐसा करने से उन्हें रोक दिया। स्थिति ऐसी हो गई थी कि अब वह अपने मायके भी नहीं जा सकती थीं अतः उन्होंने अन्यत्र जाने का फैसला किया। रानी पुष्पावती अपनी सखियों व सेवक के साथ जंगल के रास्ते होते हुए कुछ दिनों बाद आबू व वल्लभीनगर के मध्य स्थित वीरनगर नामक स्थान पर पहुंची। यहाँ वह कमलाबाई नामक एक विधवा व निसंतान ब्राह्मणी के घर रहने लगीं। कुछ माह बाद पुष्पावती ने एक बच्चे को जन्म दिया जिसे वह कमलाबाई को सौंपकर स्वयं सती हो गईं। ऐसा माना जाता है कि पुष्पावती ने बच्चे को गुफा में जन्म दिया था इसीलिए बच्चे का नाम गुहिल रख दिया गया। बच्चे का पालन-पोषण ब्राह्मणी ने ही किया था।

- बालक गुहिल बचपन से ही होनहार व साहसिक परवर्ती का था। भीलों के साथ उसके अच्छे संबंध थे। वह इन भील बालकों के साथ ही खेलता हुआ बड़ा हो गया। बड़ा होने पर उसे ब्राह्मणी द्वारा अपने वंश व अपने माँ-बाप के बारे में पता चला। गुहिल इसका प्रतिशोध लेने के उद्देश्य से वल्लभीनगर पहुँचा। लेकिन वहाँ उस समय तक उसके शत्रु का राज्य नष्ट हो चुका था। अतः गुहिल वल्लभीनगर से पुनः वीरनगर लौट आया। वीरनगर आने के बाद गुहिल ने मेवाड़ पर (ईंडर के आसपास का क्षेत्र) आक्रमण करने का निश्चय किया। उस समय मेवाड़ पर मेद जाति का शासन था। गुहिल ने भीलों से प्रार्थना की कि वो मेवाड़ को जीतने में उसकी मदद करें। गुहिल ने उनसे वादा किया कि इस सहयोग के बदले में वह और उसके वंशज कभी भी भीलों से कर नहीं लेंगे, और ना ही कभी भीलों पर अत्याचार करेंगे। 566 ई. में गुहिल ने भीलों की मदद से मेदों को पराजित कर मेवाड़ पर अधिकार कर लिया।

बप्पारावल / बापा रावल (734 ई. 810 ई.)

- बप्पा रावल (713-810) मेवाड़ राज्य में गुहिल राजपूत राजवंश के संस्थापक राजा थे। बप्पा रावल का जन्म मेवाड़ के महाराजा गुहिल की मृत्यु के 191 वर्ष 713 ई. में ईंडर में हुआ। उनके पिता ईंडर के शासक महेंद्र द्वितीय थे। बप्पा रावल गुहिल राजपूत राजवंश के वास्तविक संस्थापक थे (संस्थापक-गुहिलादित्य)। इसी राजवंश को सिसोदिया भी कहा जाता है, जिनमें आगे चलकर महान राजा राणा कुम्भा, राणा सांगा, महाराणा प्रताप हुए।
- भील समुदाय ने अरबों के खिलाफ युद्ध में बप्पा रावल का सहयोग किया। यदि बापा का राज्यकाल 30 साल का रखा जाए तो वह सन् 723 के लगभग गद्दी पर बैठा होगा। उससे पहले भी उसके वंश के कुछ प्रतापी राजा मेवाड़ में हो चुके थे, किन्तु बापा का व्यक्तित्व उन सबसे बढ़कर था। चित्तौड़ का मजबूत दुर्ग उस समय तक मोरी वंश के राजाओं के हाथ में था।

- **आदि वराह मंदिर** - यह मंदिर बप्पा रावल ने एकलिंग जी के मंदिर के पीछे बनवाया 735 ई. में हज्जात ने राजपूताने पर अपनी फौज भेजी। बप्पा रावल ने हज्जात की फौज को हज्जात के मुल्क तक खदेड़ दिया। बप्पा रावल की तकरीबन 100 पत्नियाँ थीं, जिनमें से 35 मुस्लिम शासकों की बेटियाँ थीं, जिन्हें इन शासकों ने बप्पा रावल के भय से उन्हें ब्याह दी। 738 ई. - अरब आक्रमणकारियों से युद्ध हुआ ये युद्ध वर्तमान राजस्थान की सीमा के भीतर हुआ बप्पा रावल, प्रतिहार शासक नागभट्ट प्रथम व चालुक्य शासक विक्रमादित्य द्वितीय की सम्मिलित सेना ने अल हकम बिन अलावा, तामीम बिन जैद अल उतबी व जुनेद बिन अब्दुल रहमान अल मुरी की सम्मिलित सेना को पराजित किया **बप्पा रावल ने सिंध के मुहम्मद बिन कासिम** को पराजित किया बप्पा रावल ने गजनी के शासक सलीम को पराजित किया बप्पा रावल बप्पा या बापा वास्तव में व्यक्तिवाचक शब्द नहीं हैं, अपितु जिस तरह "बापू" शब्द महात्मा गांधी के लिए रूढ़ हो चुका है, उसी तरह आदरसूचक "बापा" शब्द भी मेवाड़ के एक नृपविशेष के लिए प्रयुक्त होता रहा है। सिर्सादिया वंशी राजा कालभोज का ही दूसरा नाम बापा मानने में कुछ ऐतिहासिक असंगति नहीं होती। इसके प्रजासंरक्षण, देशरक्षण आदि कामों से प्रभावित होकर ही संभवतः जनता ने इसे बापा पदवी से विभूषित किया था। महाराणा कुंभा के समय में रचित एकलिंग महात्म्य में किसी प्राचीन ग्रंथ या प्रशस्ति के आधार पर बापा का समय संवत् 810 (सन् 753) ई. दिया है। एक दूसरे एकलिंग महात्म्य से सिद्ध है कि यह बापा के राज्यत्याग का समय था।
- उन्होंने शासक बनने के बाद अपने वंश का नाम ग्रहण नहीं किया, बल्कि मेवाड़ वंश के नाम से नया राजवंश चलाया था, और **चित्तौड़ को अपनी राजधानी** बनाया। बप्पा रावल एक न्यायप्रिय शासक थे। वे राज्य को अपना नहीं मानते थे, बल्कि शिवजी के एक रूप **'एकलिंग जी'** को ही उसका असली शासक मानते थे और स्वयं उनके प्रतिनिधि के रूप में शासन चलाते थे। लगभग 20 वर्ष तक शासन करने के बाद उन्होंने वैराग्य ले लिया और अपने पुत्र को राज्य देकर शिव की उपासना में लग गये। महाराणा संग्राम सिंह (राणा साँगा), उदय सिंह और महाराणा प्रताप जैसे श्रेष्ठ और वीर शासक उनके ही वंश में उत्पन्न हुए थे।
- **बप्पा रावल के सिक्के** : गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने अजमेर के **सोने के सिक्के को बप्पा रावल** का माना है। इस सिक्के का तोल 115 ग्रेन (65 रत्ती) है। इस सिक्के में सामने की ओर ऊपर के हिस्से में माला के नीचे श्री बोप्य लेख है, **बाई ओर त्रिशूल है और उसकी दाहिनी तरफ वेदी पर शिवलिंग** बना है। इसके दाहिनी ओर नंदी शिवलिंग की ओर मुख किए बैठे हैं। शिवलिंग और नंदी के नीचे दंडवत् करते हुए एक पुरुष की आकृति है। सिक्के के पीछे की तरफ चमर, सूर्य, और छत्र के चिह्न हैं। इन सबके नीचे दाहिनी ओर मुख किए एक गौ खड़ी है और उसी के पास दूध पीता हुआ बछड़ा है। ये सब चिह्न बप्पा रावल की शिवभक्ति और

उसके जीवन की कुछ घटनाओं से संबद्ध हैं। बप्पा रावल के बारे में कुछ तथ्य द्वारा बप्पा रावल को **कालभोजादित्य** के नाम से भी जाना जाता है इनके समय चित्तौड़ पर मौर्य शासक मान मोरी का राज था। 734 ई. में बप्पा रावल ने 20 वर्ष की आयु में मान मोरी को पराजित कर चित्तौड़ दुर्ग पर अधिकार किया। बप्पा रावल को **हारीत ऋषि** के द्वारा महादेव जी के दर्शन होने की बात मशहूर है।

- **एकलिंग जी का मंदिर** - उदयपुर के उत्तर में कैलाशपुरी में स्थित इस मंदिर का निर्माण 734 ई. में बप्पा रावल ने करवाया। इसके निकट हारीत ऋषि का आश्रम है।
- 753 ई. में बप्पा रावल ने 39 वर्ष की आयु में सन्यास लिया। इनका समाधि स्थान एकलिंगपुरी से उत्तर में एक मील दूर स्थित है। इस तरह इन्होंने कुल 19 वर्षों तक शासन किया। बप्पा रावल का देहान्त **नागदा** में हुआ, जहाँ इनकी समाधि स्थित है। शिलालेखों में वर्णन - **कुम्भलगढ़ प्रशस्ति** में बप्पा रावल को **विप्रवंशीय** बताया गया है आबू के शिलालेख में बप्पा रावल का वर्णन मिलता है कीर्ति स्तम्भ शिलालेख में भी बप्पा रावल का वर्णन मिलता है रणकपुर प्रशस्ति में बप्पा रावल व कालभोज को अलग-अलग व्यक्ति बताया गया है। हालांकि आज के इतिहासकार इस बात को नहीं मानते। कर्नल जेम्स टॉड को 8वीं सदी का शिलालेख मिला, जिसमें मानमोरी (जिसे बप्पा रावल ने पराजित किया) का वर्णन मिलता है। कर्नल जेम्स टॉड ने इस शिलालेख को समुद्र में फेंक दिया।
- यह हारीत ऋषि का अनुयायी था। **(परीक्षा की दृष्टि से महत्वपूर्ण)**
- 734 ई. में मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ पर कब्जा किया।
- राजधानी - नागदा (उदयपुर) सास बहु का मंदिर, नागदा में एक लिंग मंदिर (शिवजी) का निर्माण करवाया।
- मेवाड़ के राजा खुद को एकलिंग जी का दीवान मानते थे।
- बप्पा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुये गजनी तक चला गया।
- इसने गजनी के शासक सलीम को हटा दिया और अपने भान्जे को वहाँ का शासक बनाया।
- मेवाड़ में सोने के सिक्के चलाये।
- सोने के सिक्के का भाव 115 ग्रेन था।
- बप्पा का वास्तविक नाम **काल भोज** था।
- सी.वी. वैद्य ने बाप्पा रावल को राजस्थान का चार्ल्स मेटकोफ, कहा।

अल्लट (951-971 ई.)

- अल्लट 951 ई. में मेवाड़ के शासक बने। आहड़ से प्राप्त शक्तिकुमार का लेख 977 ई. के अनुसार अल्लट की माता महालक्ष्मी का राठौड़ वंश की होना तथा अल्लट की राणी **हरियदेवी** का हूण राजा की पुत्री होना और उस राणी का हर्षपुर गांव बसाना अंकित है, अल्लट ने आहड़ को राजधानी बनाई व यहाँ वराह मंदिर का निर्माण करवाया। यह लेख टॉड को मिला था। यह अपूर्ण लेख उदयपुर के संग्रहालय में सुरक्षित है।

अध्याय - 7

राजस्थान में 1857 की क्रांति में हुए प्रमुख विद्रोह

- कर्नल जेम्स टॉड पहला व्यक्ति था जिसने राजस्थान का सर्वप्रथम सुव्यवस्थित इतिहास लिखा इसीलिए कर्नल जेम्स टॉड को राजस्थान के इतिहास का पिता कहा जाता है।
- इतिहासकार गौरीशंकर हीराचंद ओझा ने कर्नल जेम्स टॉड के इतिहास लेखन की गलतियों को दूर किया इसीलिए गौरीशंकर हीराचंद ओझा को राजस्थान के इतिहास का वैज्ञानिक पिता कहा जाता है।
- छोड़े वाले बाबा उपनाम से इतिहास में प्रसिद्ध कर्नल जेम्स टॉड के गुरु ज्ञानचंद थे। कर्नल जेम्स टॉड ने पृथ्वीराज रासो के लगभग 30000 हजार दोहो, का अंग्रेजी में अनुवाद किया था।
- ब्रिटिश सरकार ने कर्नल जेम्स टॉड को 1818 से 1822 के मध्य पश्चिमी राजपूत राज्यों का पॉलिटिकल एजेंट नियुक्त किया जिसमें 6 रियासतें शामिल थी।
- 1. कोटा 2. बूँदी 3. जोधपुर 4. उदयपुर 5. सिरोही 6. जैसलमेर

1857 के विद्रोह के संदर्भ में विभिन्न मत (Different views in reference to the revolt of 1857)

- डॉ. रामविलास शर्मा- यह स्वतंत्रता संग्राम था।
- डॉ. रामविलास शर्मा- यह जनक्रांति थी।
- डिजरायली बेंजामिन डिज़रैली - यह राष्ट्रीय विद्रोह था।
- वी. डी. सावरकर- यह स्वतंत्रता की पहली लड़ाई थी (पुस्तक द इंडियन वॉर ऑफ़ इंडिपेंडेंस)।
- एस.एन. सेन- यह विद्रोह राष्ट्रीयता के अभाव में स्वतंत्रता संग्राम था।
- सर जॉन लॉरेंस, के. मैलेसन, ट्रैविलियन, सीले- 1857 की क्रांति एक सिपाही विद्रोह था (इस विचार से भारतीय समकालीन लेखक मुंशी जीवनलाल दुर्गादास बंदोपाध्याय सैयद अहमद खाँ भी सहमत हैं।)
- जवाहरलाल नेहरू - यह विद्रोह मुख्यतः सामन्तशाही विद्रोह था।
- सर जेम्स आउट्रम और डब्ल्यू टेलर ने इसको - यह विद्रोह हिंदू-मुस्लिम का परिणाम था कहा है।

क्रांति के प्रमुख कारण

- देशी रियासतों के राजा मराठा व पिण्डारियों से छुटकारा पाना चाहते थे।
- लॉर्ड डलहौजी की राज्य विलय की नीतियाँ।
- चर्बी लगे कारतूस का प्रयोग (एनफील्ड)।
- 1857 के विद्रोह का प्रारंभ 29 मार्च 1857 को बैरकपुर छावनी (पश्चिम बंगाल) की 34वीं नेटिव इन्फैंट्री के सिपाही मंगल पांडे के विद्रोह के साथ हुआ किन्तु संगठित क्रांति 10 मई 1857 को मेरठ (उत्तर प्रदेश) छावनी से प्रारंभ हुई थी।

- 1857 की क्रांति का तत्कालीन कारण चर्बी वाले कारतूस माने जाते हैं, जिनका प्रयोग एनफील्ड राइफल में किया जाता था। इस राइफल के बारे में भारतीय सैनिकों में अफवाह फैली की इनमें लगने वाले कारतूसों में गाय तथा सूअर की चर्बी लगी होती है।
- कारतूस का प्रयोग करने से पूर्व उसके खोल को मुंह से उतरना पड़ता था जिससे हिंदू तथा मुस्लिमों का धर्म भ्रष्ट होता है। परिणाम स्वरूप 1857 का विद्रोह प्रारंभ हुआ।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तरी पश्चिमी सीमांत प्रांत के प्रशासनिक नियंत्रण में था जिसका मुख्यालय आगरा में था इस प्रांत का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलविन था।
- अजमेर- मेरवाड़ा का प्रशासन कर्नल डिकसन के हाथों में था क्रांति के समय राजपूताना का ए.जी.जी जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस था जिस का मुख्यालय माउंट आबू में स्थित था अजमेर राजपूताना की प्रशासनिक राजधानी था और अजमेर में ही अंग्रेजों का खजाना और शस्त्रागार स्थित था।
- अजमेर की रक्षा की जिम्मेदारी 15वीं नेटिव इन्फैंट्री बटालियन के स्थान पर ब्यावर से बुलाई गई, लेफ्टिनेंट कारनेल के नेतृत्व वाली रेजिमेंट को दे दी गई मेरठ विद्रोह की खबर 19 मई 1857 को माउंट आबू पहुंची। इस क्रांति का प्रतीक चिह्न रोटी और कमल का फूल था।

राजस्थान में क्रांति के समय पॉलिटिकल एजेंट (Rajasthan Political agent in evolution)

- | | |
|----------------------|----------------|
| 1. कोटा रियासत में | - मेजर बर्टन |
| 2. जोधपुर रियासत में | - मेक मैसन |
| 3. भरतपुर रियासत में | - मोरिशान |
| 4. जयपुर रियासत में | - कर्नल ईडन |
| 5. उदयपुर रियासत में | - शावर्स और |
| 6. सिरोही रियासत में | - जे.डी.हॉल थे |

राजस्थान में क्रांति के समय राजपूत शासक (Rajasthan Rajput ruler in revolution)-

- | | |
|------------------------|--------------------|
| • कोटा रियासत में | - रामसिंह |
| • जोधपुर रियासत में | - तख्तसिंह |
| • भरतपुर रियासत में | - जसवंत सिंह |
| • उदयपुर रियासत में | - स्वरूप सिंह |
| • जयपुर रियासत में | - रामसिंह द्वितीय |
| • सिरोही रियासत में | - शिव सिंह |
| • धौलपुर रियासत में | - भगवंत सिंह |
| • बीकानेर रियासत में | - सरदार सिंह |
| • करौली रियासत में | - मदनपाल |
| • टोंक रियासत में | - नवाब वजीरुद्दौला |
| • बूँदी रियासत में | - रामसिंह |
| • अलवर रियासत में | - विनयसिंह |
| • जैसलमेर रियासत में | - रणजीत सिंह |
| • झालावाड़ रियासत में | - पृथ्वीसिंह |
| • प्रतापगढ़ रियासत में | - दलपत सिंह |
| • बाँसवाड़ा रियासत में | - लक्ष्मण सिंह और |

- इंगरपुर रियासत में - उदयसिंह थे।
राजस्थान में क्रांति के समय 6 सैनिक छावनियां थी जिनमें से खेरवाड़ा (उदयपुर) और ब्यावर सैनिकों ने विद्रोह में भाग नहीं लिया था।

सैनिक छावनियां (Military Encampment)

1. नसीराबाद (अजमेर)
2. नीमच (मध्य प्रदेश)
3. एरिनपुरा (शिवगंज तहसील सिरौही)
4. देवली (टोंक)
5. ब्यावर (ब्यावर)
6. खेरवाड़ा (उदयपुर)

NOTE - खेरवाड़ा व ब्यावर सैनिक छावनीयों ने इस सैनिक विद्रोह में भाग नहीं लिया।

राजस्थान में 1857 की क्रांति का आरम्भ

- 1857 की क्रांति के समय भारत का गवर्नर जनरल "लॉर्ड कैनिंग" था।
- जब AGG जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस को मेरठ में सैनिक क्रांति की सूचना मिली तब वह माउन्ट आबू में था।
- AGG को मेरठ में क्रांति की सूचना 19 मई 1857 को मिली।
- जॉर्ज पैट्रिक लॉरेंस ने अजमेर के मैंगजीन दुर्ग में तैनात 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री (NI) को नसीराबाद भेज दिया।
- मैंगजीन दुर्ग में अंग्रेजों का शस्त्रागार तथा सरकारी खजाना रखा हुआ था।
- इस दुर्ग का नाम अकबर द्वारा रखा गया था।
- AGG ने देशी राजाओं को पत्र लिखकर 1817-1818 की सहायक संधियों का स्मरण कराया तथा क्रांति के दमन हेतु सहयोग माँगा।
- 1857 की क्रांति के समय राजपूताना उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त के प्रशासनिक नियंत्रण में था।
- उत्तर-पश्चिम सीमा प्रान्त का मुख्यालय आगरा में था और इस प्रान्त का लेफ्टिनेंट गवर्नर कोलवीन था।

नसीराबाद में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति का बिगुल नसीराबाद छावनी के सैनिकों ने बजाया।
- यहाँ अजमेर से अचानक भेजी गई 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री के सैनिकों में असन्तोष व्याप्त हो गया था। इसके अतिरिक्त सरकार ने चर्बी वाले कारतूसों का विरोध होने के कारण इसके प्रयोग को बंद करने के आदेश दिए जिससे सैनिकों का संदेह और भी दृढ़ हो गया।
- 30 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री यहाँ पहले से ही तैनात थी।
- 28 मई 1857 को 15 वीं नेटिव इन्फेन्ट्री के सैनिकों ने विद्रोह कर अपने अधिकारी प्रिचार्ड का आदेश मानने से इंकार कर दिया।
- विद्रोही सैनिकों ने छावनी में मौजूद अंग्रेजों के मेजर स्पोटिस वुड तथा न्यूबरी की हत्या कर दी और दिल्ली कूच कर गए।
- बख्तावर सिंह द्वारा यहाँ विद्रोहियों का नेतृत्व किया गया।

- लेफ्टिनेंट माल्टर, व लेफ्टिनेंट हेथकोट के नेतृत्व में मेवाड़ के सैनिकों ने विद्रोहियों का पीछा किया लेकिन असफल रहे।

नीमच में क्रांति

- 2 जून 1857 को नीमच में कर्नल एबॉट ने हिन्दू व मुस्लिम सैनिकों को अंग्रेजों के प्रति वफादारी के लिए गीता व कुरान की शपथ दिलाई।
- अवध के एक सैनिक मोहम्मद अली बेग ने इसका विरोध किया और कर्नल एबॉट की हत्या कर दी।
- 3 जून 1857 को नीमच छावनी में क्रांति भड़क गई। यहाँ हीरालाल द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया।
- यहाँ मौजूद 40 अंग्रेजों ने भागकर इंगला गाँव में रंगाराम किसान के यहाँ शरण ली।
- मेवाड़ के सैनिक इन्हें उदयपुर ले गये जहाँ महाराणा स्वरूप सिंह ने इन्हें जगमदिर पैलेस में ठहराया।
- राजस्थान में 1857 की क्रांति के दमन में अंग्रेजों का साथ देने वाला राजपूताने का पहला शासक मेवाड़ का स्वरूप सिंह था।
- नीमच के विद्रोही सैनिकों ने आगरा पहुँचकर वहाँ जेल में बन्द कैदियों को मुक्त कर दिया। विद्रोहियों ने आगरा के सरकारी खजाने से एक लाख छब्बीस हजार रुपये लूट लिये।
- नीमच के सैनिकों ने देवली छावनी होते हुए दिल्ली कूच किया।
- शाहपुरा के शासक लक्ष्मण सिंह ने नीमच के विद्रोही सैनिकों को सहायता व शरण दी।

एरिनपुरा में क्रांति

- राजस्थान में 1857 की क्रांति में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका एरिनपुरा छावनी के सैनिकों ने निभाई।
- जोधपुर लीजन की इस टुकड़ी ने 21 अगस्त 1857 को यहाँ के सैनिकों ने आबू में विद्रोह कर दिया।
- यहाँ पर शिवसिंह, शीतल प्रसाद, मोती खाँ तथा तिलकराम ने सैनिकों को नेतृत्व प्रदान किया।
- इस छावनी के सैनिकों ने ही शिवसिंह के नेतृत्व में "चलो दिल्ली मारो फिरंगी" का नारा दिया था। यह नारा लगाते हुए यह लोग दिल्ली की ओर चल पड़े।
- एरिनपुरा छावनी जोधपुर रियासत के अन्तर्गत थी।
- वर्तमान में एरिनपुरा सिरौही जिले में है।
- मारवाड़ रियासत की सैनिक टुकड़ी जोधपुर लीजन "AGG की सुरक्षा में माउन्ट आबू में तैनात थी।
- जोधपुर लीजन के सैनिकों ने एक अंग्रेज अलेक्जेंडर की हत्या कर दी और एरिनपुरा आकर विद्रोह कर दिया।
- यहाँ से सैनिक क्रांति के मुख्य केन्द्र दिल्ली रवाना हो गए।
- जब इसकी खबर आऊवा के असंतुष्ट जागीदार कुशलसिंह चंपावत को लगी तो वह खेरवा गाँव में विद्रोहियों से आ मिला।

- स्वामी दयानंद सरस्वती के संपर्क में आने के बाद वे स्वदेशी वस्तुओं व वस्त्रों के पक्के समर्थक बन गये। 1897 ई. में महाराष्ट्र के पूना नगर में प्लेग कमिश्नर रैंड व उसके सहायक आयर्स्ट की हत्या कर दी गयी।
- ब्रिटिश सरकार को श्यामजी कृष्ण वर्मा पर संदेह हुआ। अतः श्यामजी कृष्ण वर्मा किसी तरह जान बचाकर इंग्लैण्ड चले गये जहाँ उन्होंने इंडिया हाउस की स्थापना की। इंडिया हाउस भारतीय क्रांतिकारियों का गढ़ बन गया और वहाँ से भारत में क्रांतिकारियों को हरसंभव सहायता दी जाती रही।
- श्यामजी कृष्ण वर्मा राजस्थान के क्रांतिकारियों के प्रेरणा-स्रोत रहे। राजस्थान में क्रांतिकारियों का नेतृत्व अर्जुनलाल सेठी, केसरीसिंह बारहठ, खरवा के राव गोपालसिंह आदि ने किया।

अध्याय - 10

राजस्थान का एकीकरण

- ब्रिटिश प्रधानमंत्री एटली ने घोषणा की थी कि भारत की सत्ता भारतीयों को 3 जून 1948 तक सौंप दी जाएगी।
- इन्होंने लार्ड माउन्टबेटन को नया गवर्नर जनरल नियुक्त किया (भारत का अंतिम गवर्नर जनरल)
- 31 दिसम्बर 1945 को उदयपुर राज्य में पण्डित जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता में अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद् के अधिवेशन में राजस्थान के एकीकरण का सुझाव दिया गया।
- राजाओं के वैमनस्य को देखते हुए यह लगने लगा था कि ये लोग स्वयं कोई निर्णय नहीं ले पायेंगे। इसलिए यह अनुभव किया जाने लगा कि अब केन्द्र सरकार को ही एकीकरण का प्रयास करना होगा।
- अतः सरदार वल्लभ भाई पटेल ने 16 दिसम्बर 1948 को यह घोषणा की कि राजस्थान की सभी छोटी-बड़ी रियासतों को मिलाकर एक संघ का निर्माण किया जाएगा।
- केबिनेट मिशन के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने 22 मई 1946 ई. को घोषणा की कि छोटी-छोटी रियासतों को आपस में मिलाकर बड़ी इकाईयां बना लेनी चाहिए या पड़ोस की बड़ी रियासतों या प्रांतों में मिल जाना चाहिए।
- भारत स्वतंत्रता अधिनियम - 1947 की आठवीं धारा के अनुसार देशी रियासतों पर से ब्रिटिश प्रभुसत्ता का अंत हो गया।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत में तीन श्रेणी के राज्य थे -
 - (1) ए श्रेणी - वे राज्य, जो पूर्व में प्रत्यक्ष ब्रिटिश नियंत्रण में थे जैसे बिहार, बम्बई, मद्रास आदि। इनके प्रमुख राज्यपाल (गवर्नर) कहलाते थे।
 - (2) बी श्रेणी - वे राज्य, जो स्वतंत्रता के बाद छोटी-बड़ी रियासतों के एकीकरण द्वारा बनाये गए थे, जैसे राजस्थान, मध्य भारत आदि। इनके प्रमुख राजप्रमुख कहलाते थे।
 - (3) सी श्रेणी - ये वे छोटे-छोटे राज्य थे, जिन्हें ब्रिटिश काल में चीफ कमिशनर के प्रान्त कहा जाता था जैसे अजमेर, दिल्ली।
- लार्ड माउन्टबेटन ने 3 जून 1947 को भारत विभाजन/डिकी बर्ड प्लान/बंटन योजना प्रारम्भ की।
- इस अधिनियम की धारा 14 के अनुसार अब देशी रियासतें या तो भारत या पाकिस्तान में अपना विलय कर सकती थी या अपना स्वतंत्र अस्तित्व बनाये रख सकती थी।
- सरदार वल्लभ भाई पटेल के नेतृत्व में एक रियासती विभाग का गठन किया गया जिसके सचिव वी.पी. मेनन बने, क्योंकि वी.पी. मेनन उस समय लार्ड माउन्टबेटन के सलाहकार थे।
- रियासती विभाग की स्थापना 5 जुलाई 1947 को की गई।
- भारत सरकार ने यह तय किया कि केवल वे ही रियासतें अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती हैं जिनकी वार्षिक

आमदनी एक करोड़ रुपये या जनसंख्या 10 लाख से अधिक है।

- इस मापदण्ड के अनुसार राजस्थान की केवल चार रियासतें जयपुर, जोधपुर, उदयपुर व बीकानेर ही अपना स्वतंत्र अस्तित्व रख सकती थीं।
- जबकि चार अन्य रियासतें अलवर, भरतपुर, डूंगरपुर एवं जोधपुर अपने आप को स्वतंत्र रखना चाहती थीं।
- संविधान के 7 वें संशोधन द्वारा 'ए', 'बी', 'सी' श्रेणी का भेदभाव समाप्त कर दिया गया तथा राजप्रमुख के स्थान पर राज्यपाल का पद सृजित हुआ। राजपूताना को बी श्रेणी का राज्य माना गया था।
- मेवाड़ के महाराणा भूपालसिंह ने राजस्थान की सभी रियासतों को मिलाकर राजस्थान यूनियन का गठन करने हेतु 25-26 जून, 1946 को उदयपुर में राजपूताना, गुजरात एवं मालवा के नरेशों का सम्मेलन बुलाया। उनका राजस्थान यूनियन के गठन का प्रयास असफल रहा।
- इसी तरह के असफल प्रयास कोटा महाराव भीमसिंह ने हाईकोर्टी संघ बनाकर करने का प्रयास किया।
- कोटा महाराव भीमसिंह को आधुनिक इतिहास में राजस्थान एकीकरण का जनक कहा जाता है।
- डूंगरपुर के शासक महारावल लक्ष्मण सिंह ने बागड़ संघ बनाने का प्रयास किया।
- राजस्थान की भौगोलिक स्थिति को सर्वप्रथम एक करने का प्रयास मुगल सम्राट अकबर द्वारा किया गया था।
- स्वतंत्रता प्राप्ति के समय राजस्थान में कुल 19 रियासतें, 3 ठिकाने (चीफशिप / खुदमुख्तियार), लावा (जयपुर रियासत में स्थित, वर्तमान में टोंक में), कुशलगढ़ (बाँसवाड़ा), नीमराणा (कोटपूतली-बहरोड़) तथा 1 केन्द्र शासित प्रदेश अजमेर-मेरवाड़ा था।
- धौलपुर व भरतपुर रियासत जाट शासकों के अधीन थी व टोंक रियासत पर मुस्लिम नवाब शासन करते थे।
- राजस्थान की सबसे प्राचीन रियासत मेवाड़ थी जिसकी स्थापना गुहिल नामक व्यक्ति ने 566 ईस्वी में की तथा इसकी राजधानी नागदा थी। यहीं रियासत उदयपुर राज्य के नाम से प्रसिद्ध हुई।
- सबसे नयी - झालावाड़ रियासत (1835 ई.) थी। यह राजपूताना की एकमात्र रियासत थी जिसकी स्थापना एक अंग्रेज लार्ड आकलैंड द्वारा की गई थी।
- क्षेत्रफल एवं जनसंख्या दोनों के आधार पर सबसे छोटी रियासत शाहपुरा थी। राजा सुदर्शन देव उसके शासक थे।
- इन्होंने ही 14 अगस्त, 1947 को राजस्थान में सर्वप्रथम उत्तरदायी शासन शाहपुरा में स्थापित किया था।
- क्षेत्रफल के आधार पर सबसे बड़ी रियासत मारवाड़ (जोधपुर) थी। महाराजा हनुवन्त सिंह उसके शासक थे। इन्होंने जोधपुर का विलय पाकिस्तान में करने का असफल प्रयास किया था।
- जनसंख्या के आधार पर सबसे बड़ी रियासत जयपुर थी।

- राजस्थान का एकीकरण सात चरणों में पूरा हुआ। यह प्रक्रिया 17 मार्च 1948 से आरम्भ होकर 1 नवम्बर 1956 तक चली।
- 30 मार्च को राजस्थान दिवस के रूप में मनाया जाता है। क्योंकि इस दिन राजस्थान की बड़ी रियासतों को मिलाकर एकीकरण का कार्य लगभग पूर्ण कर लिया गया था।
- आधुनिक राजस्थान का वर्तमान स्वरूप 1 नवम्बर 1956 को अस्तित्व में आया था। अतः 1 नवम्बर को राजस्थान स्थापना दिवस मनाया जाता है।
- राजस्थान के प्रथम मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री (23 मार्च, 1949 को बने) थे।
- राजस्थान के प्रथम मनोनीत मुख्यमंत्री पं. हीरालाल शास्त्री थे।
- राजस्थान के प्रथम दलित या अनुसूचित जाति का मुख्यमंत्री जगन्नाथ पहाड़िया थे।
- राजस्थान के प्रथम निर्वाचित मुख्यमंत्री टीकाराम पालीवाल थे।
- 1 नवम्बर, 1956 को राजस्थान के मुख्यमंत्री मोहन लाल सुखाड़िया थे इसलिए इन्हें आधुनिक राजस्थान का निर्माता कहा जाता है।
- 1 नवम्बर, 1956 से राजस्थान में राज्यपाल का पद प्रारम्भ हुआ और सरदार गुरुमुख निहाल सिंह प्रथम राज्यपाल बने।
- राजस्थान के प्रथम महाराज प्रमुख भूपालसिंह (उदयपुर), प्रथम राजप्रमुख उदयभान सिंह (धौलपुर) व प्रथम उपराज प्रमुख गणेशपाल वासुदेव (करौली) थे।
- श्री पी. सत्यनारायण राव की अध्यक्षता में गठित कमेटी की सिफारिशों पर जयपुर को राजस्थान की राजधानी घोषित किया गया।
- श्री पी. सत्यनारायण राव कमेटी के अन्य सदस्य वी. विश्वनाथ एवं वी. के गुप्ता थे।
- पण्डित सत्यनारायण राव कमेटी के अनुसार हाई कोर्ट, जोधपुर में, शिक्षा विभाग बीकानेर में, खनिज और कस्टम व एक्साइज विभाग उदयपुर में राजस्व मण्डल अजमेर में वन और सहकारी विभाग कोटा में एवं कृषि विभाग भरतपुर में रखने का निर्णय किया गया।
- शंकर राव देव समिति की सिफारिश को ध्यान में रखते हुए मत्स्य संघ को वृहत् राजस्थान में मिला दिया। वहाँ के प्रधानमंत्री श्री शोभाराम को शास्त्री मंत्रिमण्डल में शामिल कर लिया गया।
- इस समिति के अन्य सदस्य श्री प्रभुदयाल एवं श्री आर. के. सिंघवी थे।
- बाँसवाड़ा के महारावल चन्द्रवीर सिंह ने एकीकरण के समय विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते हुए कहा कि मैं अपने डेथ वारन्ट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।
- वी.पी. मेनन के ठीक समय पर किये गये प्रयासों व लार्ड माउन्टबेटन के समझाने के कारण जोधपुर नरेश हनुवन्त सिंह ने अपनी रियासत का पाकिस्तान में विलय करने का विचार त्याग दिया।

- जैन चित्रकला के जादूगर - कैलाश चंद्र शर्मा
- अलवर का रसखान - अलीबख्श (अतरौली घराने के संगीतज्ञ)
- "रुलाने वाले फकीर" - मानतोल खान
- प्रयोग धर्मी चित्रकार - सुधीर वर्मा
- पखावज के जादूगर - पंडित परशोतम दास (नाथद्वारा, राजसमंद)
- तनावपूर्ण चित्रों के जादूगर-अब्दुल करीम (शाहपुरा)
- नारायण सिंह बैंगनीया (धौलपुर), देश का सबसे छोटे कद का कलाकार।
- राजस्थान जुबान की मशाल - डॉ. सीताराम लालस (एन्साइक्लोपीडिया ब्रिटानिका द्वारा कहा गया था)
- जाटों का प्लेटो (अफलातून) - राजा सूरजमल (भरतपुर)
- मारवाड़ राज्य का कानून निर्माता - मुंशी देवी प्रसाद
- माच ख्याल
- के पितामह - बगसुलाल खमेसरा (भीलवाड़ा)
- चिड़ावा (झुंझुनू) के गाँधी - मास्टर प्यारेलाल गुप्ता
- राजस्थान का भारतेन्दु - शिवचंद्र भरतिया
- घोड़े वाले बाबा - कर्नल जेम्स टॉड
- माउन्ट एवरेस्ट ऑफ़ म्यूजिक - संगीत सम्राट अल्लदिया खान (मी. जयकर ने कहा)
- राजस्थान की लता मंगेशकर - सीमा मिश्रा
- राजस्थान की हेमा मालिनी - नीलू
- राजस्थान की जलपरी - रीमा दत्ता (अजमेर)
- शेखावटी के गाँधी - बट्टीनारायण सोढाणी (सीकर)

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

अध्याय - 1

चित्रकला व इसकी विभिन्न शैलियाँ

- चित्रकला के उद्भव के संकेत मनुष्य की प्रारंभिक काल की सभ्यता के मिलते हैं, जैसे - जैसे सभ्यता विकसित होती गयी, वैसे - वैसे चित्रकला में भी अधिक प्रवीणता देखी जाने लगी।
- प्रागैतिहासिक काल में मनुष्य गुफाओं में रहता था तो गुफाओं की दीवारों पर चित्रकारी की, बाद में जब नगरीय सभ्यता का उदय होने लगा तो चित्रकारी गुफाओं से निकल कर दैनिक प्रयोग में आने वाली वस्तुओं पर चित्रकारी करने लगे जैसे :- बर्तनों, वस्त्रों आदि।
- ❖ **राजस्थानी चित्रकला का उद्भव और विकास**
 - बैराठ सभ्यता (कोटपूतली-बहरोड़) से मिले अनेक चित्र, कालीबंगा सभ्यता (हनुमानगढ़) से मिले अलंकृत ईंटों के से, आलनिया (कोटा) से मिले 5000 ई. पू. के चित्रों से तथा डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर द्वारा दर (भरतपुर) से खोजे गए अनेक पक्षियों के चित्रों से यह ज्ञात होता है की राजस्थान में प्राचीनकाल से ही चित्रकला विद्यमान थी।
 - राजस्थान की इस प्राचीन चित्रकला को विभिन्न साक्ष्यों के माध्यम से बताया जा सकता है, जो निम्न हैं-
 - (i) विक्रम संवत् 84 के बड़ली गाँव के शिलालेख व माध्यमिका (चित्तौड़गढ़) के दो शिलालेखों की लिपि दर्शाती है कि राजस्थान की चित्रकला में अजन्ता चित्र शैली प्राचीनकाल में स्मृद् थी।
 - (ii) जैसलमेर से मिले 1060 ई. के चित्रित ग्रन्थ 'दस वैकल्पिक सुत्र या औंध नियुक्ति वृत्ति' राजस्थान का सबसे प्राचीन चित्रित ग्रन्थ है। इसे नागपाल के वंशज आनन्द ने आलेख्यकार पाटिल से निर्मित कराया था। इन ग्रंथों में लक्ष्मी, इंद्र, हाथी की आकृतियाँ अंकित हैं। इस ग्रन्थ को भारतीय चित्रकला का दीप स्तंभ कहते हैं।
 - (iii) राजस्थान का ताम्रपत्र पर चित्रित प्रथम ग्रंथ 'श्रावक-प्रतिक्रमण सूत्र चूर्णी' है जो तेजसिंह के समय 1260 ई. में आहड़ (उदयपुर) में चित्रित हुआ। इस ग्रंथ का चित्रकार कमलचंद्र था।
 - (iv) मेवाड़ का दूसरा चित्रित ग्रंथ 'सुपासनाह चरित्रम या सुपार्श्वनाथ चरित्रम्' है। इस ग्रंथ का चित्रकार हीरानंद था। यह ग्रंथ 1422-23 में महाराणा मोकल के समय देलवाड़ा में चित्रित किया गया।
 - (v) 16वीं शताब्दी में तिब्बत के इतिहासकार तारानाथ ने मरु प्रदेश में शृंगधर चित्रकार का उल्लेख किया है। जो प्रथम चित्रकार था। शृंगधर 7 वीं सदी का चित्रकार था जो राजस्थान का प्रथम चित्रकार माना जाता है। शृंगार मारवाड़ के राजा शील का दरबारी चित्रकार था। शृंगधर ने यक्ष शैली में चित्र बनाये।

- राजस्थानी चित्रकला का उद्भव 15-16वीं सदी के लगभग अपभ्रंश शैली / जैन शैली / अजन्ता शैली अर्थात् गुजराती शैली से माना जाता है।
- विशुद्ध राजस्थानी चित्रकला का आरंभ 1500 ई. के आस पास माना जाता है।
- राजस्थानी चित्रकला की जन्मभूमि 'मेदपाट / मेवाड़' था।
- कार्ले खंडालवाला ने 17वीं व 18वीं शताब्दी की 'राजस्थानी चित्रकला का स्वर्णयुग' बताया।
- सर्वप्रथम आनंद कुमार स्वामी ने अपने ग्रंथ 'राजपूत पेन्टिंग' में राजस्थान की चित्रकला के स्वरूप को 1916 ई. में उजागर किया।
- भारतीय चित्रकला के पितामह केरल के रवि वर्मा हैं।
- राजस्थान में आधुनिक चित्रकला को प्रारंभ करने का श्रेय कुदनलाल मिस्त्री को दिया जाता है।
- राजस्थानी विचार धारा की चित्रकला का आरम्भिक केन्द्र बूंदी था।

❖ राजस्थानी चित्रकला का नामकरण

- गांगुली व हैवल - राजपूत चित्रकला
- एन. सी. मेहता - हिंदु चित्रशैली
- रामकृष्णदास - राजस्थानी चित्रकला
- कपड़े पर मोम की परत चढ़ाकर चित्र बनाना वार्तिक कहलाता है।
- गोबर से बनाया गया पूजा स्थल साझी कहलाता है।
- अलंकृत करके बनाना मांडणा कहलाता है।
- लकड़ी पर किया जाने वाला चित्रण कावड़ कहलाता है।
- कागज पर बने विभिन्न देवी - देवताओं के चित्रण पाने कहलाते हैं।

❖ भौगोलिक और सांस्कृतिक आधार पर राजस्थानी चित्रकला को चार प्रमुख स्कूलों / शैलियों में बांटा गया है-

मेवाड़ स्कूल	मारवाड़ स्कूल	ढूंढाड़ स्कूल	हाड़ोती स्कूल
उदयपुर नाथद्वारा चावण्ड देवगढ़	जोधपुर बीकानेर जैसलमेर किशनगढ़ नागौर अजमेर	आमेर जयपुर शेखावाटी अलवर करौली उणियारा	बूंदी कोटा झालावाड़

राजस्थानी चित्रकला की विशेषताएँ

"राजस्थानी चित्र शैली विशुद्ध रूप से भारतीय है"- ऐसा मत श्री लारेन्स विनियम ने स्पष्ट रूप से प्रकट किया है। राजस्थानी शैली की प्रमुख विशेषतायें निम्नलिखित हैं-

प्राचीनता

- राजस्थानी चित्रकला का इतिहास अति प्राचीन है। आरंभिक इतिहास से ही प्राप्त प्रमाणों में सूर्य, चाँद, पशुपति, पहाड़, ग्राम व प्रकृति आदि के चित्र मिलते हैं।

कलात्मकता

- राजस्थानी चित्रकला से कलात्मकता की झलक मिलती है क्योंकि इसकी शैली में अजन्ता शैली का समन्वय है।
- मध्यकाल में मुगल शैली के सम्मिश्रण ने इसे एक नया रूप दिया।

रंग वैशिष्ट्य

- राजस्थान चित्रकला में रंगों का जादू विशेष उल्लेखनीय है।
- लाल, पीला, श्वेत एवं हरा इस शैली के प्रमुख रंग हैं जिनके समन्वय से चित्रकारों ने चित्रों को अनूठा बना दिया है।
- चटकीले, चमकदार और दीप्तियुक्त रंगों का संयोजन शैली में विशिष्ट है।
- लोक जीवन का सानिध्य- भित्ति चित्रण की परम्परा में विकसित राजस्थानी अलहड़ता और विषयवस्तु के चयन में लोक जीवन की भावनाओं का बाहुल्य है।

भाव-प्रवर्तता का प्रार्च्य

- राजस्थानी चित्रकला रस-प्रधान है।
- भावनाओं व भक्ति और श्रृंगार तथा राधाकृष्ण की माधुर्य भावना का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला की प्रमुख विशेषता है।

विषय वस्तु का वैविध्य

- राजस्थानी चित्रकला विषय की दृष्टि से अत्यधिक विस्तृत है।
- राधाकृष्ण की विभिन्न लीलाओं, रामकथा, महाभारत और भागवत पुराण की विभिन्न कथायें, नायक नायिका, भेद, राग-रागिनी, बारह-मासा, ऋतुवर्णन, दरबारी जीवन, उत्सव, शिकार, राजा रानियों का चित्रांकन, लोक कथायें आदि असंख्य विषयों पर राजस्थानी चित्रकला आधारित है काव्य का चित्रण इस शैली की अपनी निजी विशेषता है। राजस्थान में विषयों को लेकर इतने चित्र उपलब्ध हैं कि वे सभी एक जीवित संसार प्रस्तुत करते हैं।

देशकाल की अनुरूपता

- राजपूत सभ्यता, संस्कृति और तत्कालीन परिस्थिति का चित्रण राजस्थानी चित्रकला में किया गया है।
- दुर्ग, प्रासाद, हवेलियाँ, दरबार आदि का राजपूती वैभव एवं भक्ति काल और रीति काल का सजीव चित्रण राजस्थानी चित्रकला में ही पाया जाता है।

प्राकृतिक परिवेश की अनुरूपता

- राजस्थानी चित्रकला में प्राकृतिक सरोवर, वन-उपवन, पेड़-पौधे, फूल-पत्तियाँ, पक्षियों से भरे हुए निकुंज, मृग, मयूर, सिंह, हाथी आदि का सजीव चित्रांकन किया गया है।

नारी सौंदर्य

- राजस्थानी चित्रकला शैली में नारी सुन्दरता की खान है।
- चित्रकला शैली में भारतीय नारी के आदर्श सौंदर्य की उसमें पूरी छटा है।
- राजस्थान चित्रकला ने भारतीय नारी के सौंदर्य को उभारने में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नायिकाओं के

आभूषण, अंग प्रत्यंग, नासिका और नेत्रों के अंकन अत्यन्त कलापूर्ण चित्रित हुए हैं।

वृक्ष	चित्रशैली
कदम्ब	उदयपुर (मेवाड़) शैली
केला	किशनगढ़(नाथद्वारा) शैली
खजूर	कोटा, बूंदी शैली
पीपल	अलवर, जयपुर शैली
आम	जोधपुर, बीकानेर शैली

पशुपक्षी	चित्रशैली
काँआ, चील, ऊँट, घोड़े	जोधपुर, बीकानेर शैली
हाथी व चकोर	उदयपुर शैली
गाय	नाथद्वारा शैली
मोर व घोड़ा	जयपुर, अलवर शैली

शैली	रंग
मारवाड़, देवगढ़, बीकानेर	पीला-लाल
नाथद्वारा	पीलाहरा-
अजमेर	पीलाबेंगनी-हरा-लाल-
किशनगढ़	श्वेत, गुलाबी
मेवाड़	पीलालाल-
कोटा	पीलानीला-हरा-
बूंदी	हरा
जयपुर	केसरिया, हरा, लाल

चित्रकला के विकास हेतु कार्यरत संस्थाएं	
संस्था	स्थान
चितेश	जोधपुर
धोरा	जोधपुर
तूलिका कलाकार परिषद	उदयपुर
टखमण -28	उदयपुर
कलावृत्त	जयपुर
पेंग	जयपुर
आयाम	जयपुर
क्रिएटिव आर्टिस्ट ग्रुप	जयपुर
अंकन	भीलवाड़ा

आँखों की बनावट	चित्रशैली
तिरछी व चोकोर के सामान आंखें	नाथद्वारा शैली
मर्ग के समान आंखें	बीकानेर, कोटा शैली
बादाम के सामान आंखें	जोधपुर शैली
मछली के समान आंखें	मेवाड़ शैली
कमल व खंजन के सामान आंखें	जयपुर अलवर शैली

राजस्थानी चित्रकला संग्रहालय

पोथिखाना	जयपुर
पुस्तक प्रकाश	जोधपुर
सरस्वती भंडार	उदयपुर
जैन भंडार	जैसलमेर
कोटा संग्रहालय	कोटा
अलवर संग्रहालय	अलवर

ललित कला के विकास से संबंधित प्रमुख संस्थाएं

❖ ललित कला अकादमी - जयपुर

- स्थापना 24 नवम्बर, 1957
- इस अकादमी का प्रमुख कार्य कलात्मक गतिविधियों का संचालन करना, कला प्रदर्शनियों का आयोजन तथा कलाकारों को फेलोशिप प्रदान करना होता है
- राजस्थान की दृश्य तथा शिल्प कला की प्रवृत्तियों को प्रोत्साहन।
- राज्य में सांस्कृतिक एकता स्थापित करना।

❖ राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स- जयपुर

- स्थापना -1857
- जयपुर महाराजा सवाई रामसिंह द्वितीय द्वारा स्थापित किया गया तब इसका नाम मदरसा-हुनरी था।
- स्वतंत्रता के बाद इसका नाम राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट्स हो गया।
- वर्तमान में मूर्तिकला तथा चित्रकला से संबंधित डिप्लोमा करवाया जाता है।

❖ जवाहर कला केन्द्र-जयपुर

- स्थापना 8 अप्रैल, 1993
- इसके वास्तुकार चार्ल्स कोरिया थे।
- उद्घाटन -शंकर दयाल शर्मा (तत्कालीन राष्ट्रपति)
- राजस्थान की समृद्ध कला परम्परा के संवर्धन, लोक मानस में बिखरी सांस्कृतिक विरासत एवं मस्धरा की अनमोल धरोहर के संरक्षण हेतु।

मुख्य तथ्य-

❖ रामगोपाल विजयवर्गीय

- जन्म-1905, बालेर (सवाई माधोपुर)।
- परम्परा वादी चित्रकार।
- सर्वाधिक प्रिय विषय नारी चित्रण।
- राजस्थान में एकल चित्रण प्रदर्शनी प्रारम्भ करने का श्रेय।
- राजस्थान स्कूल आर्ट के प्राचार्य रह चुके।
- राजस्थान के प्रथम चित्रकार जिन्हें वर्ष 1984 को पद्मश्री दिया गया था।

❖ भूरसिंह शेखावत (गाँव का चितेश)

- जन्म-1914 धौधलिया ग्राम (बीकानेर)।
- खाना बनाती स्त्री, सब्जी तोलती मालिन, सारंगी बाजते कलाकार, राष्ट्रभक्त नेता, शहीद, क्रांतिकारी, लौह पुरुष आदि प्रमुख चित्र।

अध्याय - 8

राजस्थान में सामाजिक जीवन

मेले एवं त्यौहार

राजस्थान के प्रमुख मेले -

अजमेर के मेले

- **पुष्कर मेला** - यह मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक भरता है। यह राजस्थान का सबसे बड़ा सांस्कृतिक मेला/ सबसे बड़ा रंगीन/रंग बिरंगा / सर्वाधिक विदेशी पर्यटकों का आगमन वाला मेला है। खाजा साहब का उर्स - यह उर्स अजमेर में रज्जब माह की 1 से 6 तारीख तक भरता है। अढ़ाई दिन के झोपड़े में।
- **कल्पवृक्ष मेला** - यह मेला मांगलियावास (अजमेर) में श्रावण मास की हरयाली अमावस्या को भरता है।
- **कार्तिक पशु मेला** - यह पशु मेला पुष्कर (अजमेर) में कार्तिक शुक्ल 8 से मार्गशीर्ष 2 तक भरता है।

अलवर के मेले

- **चंद्र प्रभु मेला** - यह मेला तिजारा, अलवर में फाल्गुन शुक्ला सप्तमी व श्रावण शुक्ला दशमी को भरता है।
- **नारायणी माता का मेला** - यह मेला बरवा डूंगरी सरिस्का (अलवर) में वैशाख शुक्ल एकादशी को भरता है।
- **हनुमानजी का मेला** - यह मेला पांडुपोल (अलवर) में भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी एवं पंचमी को भरता है।
- **भूर्तहरि मेला** - यह मेला भूर्तहरि (महान योगी भूर्तहरि की तपो भूमि) पर अलवर में भाद्रपद शुक्ला अष्टमी को भरता है। यह कनफटे नाथों की तीर्थस्थली है।
- **बिलारी माता मेला** - बिलारी माता का यह मेला बिलारी (अलवर) में चैत्र शुक्ला अष्टमी को भरता है।

बाड़मेर के मेले

- **रणछोड़राय का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के खेड़ क्षेत्र में प्रतिवर्ष राधाष्टमी, माघ पूर्णिमा, बैशाख एवं श्रावण मास की पूर्णिमा व कार्तिक पूर्णिमा भादवा सुदी चतुर्दशी को भरता है।
- **हल्देश्वर महादेव शिवरात्रि मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के पीपलूद (छप्पन की पहाड़ियों के बीच यह मारवाड़ का लघु माउन्ट आबू है।) में शिवरात्रि के अवसर पर भरता है।
- **रानी भटियाणी का मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के जसोल क्षेत्र में कार्तिक वदी पंचमी को भरता है।
- **बजरंग पशु मेला** - यह मेला बाड़मेर जिले के सिणधरी क्षेत्र में मंगसर वदी तृतीया को भरता है।

बालोतरा के मेले

- **मल्लीनाथ पशु मेला** - यह मेला बालोतरा जिले के तिलवाड़ा क्षेत्र में चैत्र कृष्णा एकादशी से चैत्र शुक्ला एकादशी तक भरता है।

- **नाकोड़ाजी का मेला** - यह मेला बालोतरा जिले के नाकोड़ा तीर्थ मेवानगर में पोष कृष्ण दशमी को भरता है।

बीकानेर जिले के मेले

- **निर्जला ग्यारस मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के लक्ष्मीनाथ मंदिर में ज्येष्ठ सुदी एकादशी को भरता है।
- **जम्भेश्वर मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के मुकाम-तालावा (जोखा) में वर्ष में दो बार - फाल्गुन व आश्विन अमावस्या को भरता है।
- **नागणेची माता का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले में नवरात्रा के अवसर पर भरता है।
- **चनणी चरी मेला (सेवकों का मेला)** - यह मेला बीकानेर जिले के देशनोक में फाल्गुन शुक्ल सप्तमी को भरता है।
- **कपिल मुनि का मेला** - यह मेला बीकानेर जिले के श्री कोलायत जी में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **करणी माता का मेला** - यह मेला देशनोक (बीकानेर) में नवरात्रा (कार्तिक एवं चैत्र माह में) में भरता है।

बांसवाड़ा जिले के प्रमुख मेले

- **घोटिया अम्बा मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घोटिया (बारीगामा) नामक स्थान पर चैत्र अमावस्या को (जिले का सबसे बड़ा ग्रामीण मेला) भरता है।
- **कल्लाजी का मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के गोपीनाथ का गढ़ा नामक स्थान पर आश्विन सुदी नवरात्रि प्रथम रविवार को भरता है।
- **अंदेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के अंदेश्वर में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **गोपेश्वर मेला** - यह मेला बांसवाड़ा जिले के घाटोल के निकट कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।
- **मानगढ़ धाम मेला (आदिवासियों का मेला)** - यह मेला बांसवाड़ा के आनंदपुरी के निकट मानगढ़ धाम में मार्गशीर्ष पूर्णिमा को भरता है।

चूरु जिले के मेले

- **भभूता सिद्ध का मेला** - यह मेला चूरु जिले के चंगोई (तारानगर) में भादवा सुदी सप्तमी को भरता है।
- **गोगा जी का मेला** - यह मेला चूरु जिले के ददरेवा गांव में भाद्रपद कृष्णा नवमी (गोगानवमी) को भरता है।
- **सालासर बालाजी का मेला** - यह मेला चूरु जिले के सालासर (सुजानगढ़) में चैत्र व कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

बारां जिले के मेले

- **सीताबाड़ी का मेला (धार्मिक व पशु मेला)** - यह मेला बारां जिले के सीताबाड़ी, केलवाड़ा (सहरिया जनजाति का कुम्भ) नामक स्थान पर ज्येष्ठ अमावस्या (इस मेले में सहरियाओं का स्वयंवर होता है) को भरता है।
- **डोल मेला** - यह मेला बारां जिले के डोल तालाब पर जलझूलनी एकादशी (भाद्रपद शुक्ला एकादशी) को भरता है। इसमें देवविमानों सहित शोभायात्रा निकलती है।

- **ब्रह्मणी माता का मेला** - यह मेला बारां जिले के सोरसन में भरता है। यहां पर गधों का मेला भी लगता है।
- **फूलडोल शोभा यात्रा महोत्सव (श्रीजी का मेला)** - यह मेला बारां जिले के किशनगंज में होली (फाल्गुन मास की पूर्णिमा) के दिन भरता है।
- **कपिल धारा का मेला** - यह मेला सहरिया क्षेत्र (बारां) में कार्तिक पूर्णिमा को भरता है।

डीग के मेले

- **गंगा दशहरा मेला** - यह मेला डीग जिले के कामां क्षेत्र में ज्येष्ठ शुक्ल सप्तमी से द्वादशी तक भरता है।
- **बृज महोत्सव** - यह मेला द्वादशी से माघ शुक्ल - डीग जिले में भरता है।

भरतपुर के मेले

- **बसंती पशु मेला** - यह मेला माघ अमावस्या से शुक्ल पंचमी तक भरता है।
- **गरुड़ मेला** - यह मेला भरतपुर जिले के बंशी पहाड़पुर में कार्तिक शुक्ल तृतीया को भरता है।
- **भोजन बारी/भोजन थाली परिक्रमा** - भाद्रपद शुक्ल पूर्णिमा को कामा में भरता है।
- **जसवंत पशु मेला** - यह मेला भरतपुर जिले में अश्विन शुक्ल पंचमी से पूर्णिमा तक भरता है।

कोटपूतली-बहरोड़ के मेले

- **बाणगंगा मेला** - यह विराटनगर, कोटपूतली-बहरोड़ में वैशाख पूर्णिमा को भरता है।

जयपुर के मेले

- **गणगौर मेला** - गणगौर मेला जयपुर में चैत्र शुक्ला तीज व चौथ को भरता है।
- **शीतलामाता का मेला** - यह मेला चाकसू जयपुर में चैत्र कृष्ण अष्टमी को भरता है।
- **गधों का मेला** - आश्विन कृष्ण सप्तमी से आश्विन कृष्ण एकदशी तक लुनियावास (सांगानेर) गांव में भरता है।
- **तीज की सवारी एवं मेला** - यह जयपुर में श्रावण शुक्ला तृतीया को आयोजित होता है।

शाहपुरा के मेले

- **फूलडोल का मेला (रामस्नेही सम्प्रदाय)** - यह मेला शाहपुरा जिले के रामनिवास धाम (रामद्वारा) में चैत्र कृष्णा प्रतिपदा से पंचमी तक भरता है।

भीलवाड़ा के मेले

- **सवाई भोज का मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के आसींद में सवाई भोज स्थान पर भाद्रपद शुक्ल अष्टमी को भरता है।
- **तिलस्वां महादेव मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के तिलस्वां (मांडलगढ़) में शिवरात्रि फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी के अवसर पर भरता है।

- **सौरत (त्रिवेणी) का मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के त्रिवेणी संगम सौरत (मेनाल, मांडलगढ़) में शिवरात्रि के पर्व पर आयोजित होता है।
- **धनोप माता का मेला** - यह मेला भीलवाड़ा जिले के धनोप गांव (खारी व मानसी नदी के बीच स्थित) में चैत्र शुक्ल एकम से दशमी तक भरता है।

जोधपुर के मेले

- **नाग पंचमी का मेला** - यह मेला मंडोर (जोधपुर) में भाद्रपद शुक्ल पंचमी को भरता है।
- **धीगागवर बेतमार मेला** - यह मेला जोधपुर में वैशाख कृष्ण तृतीया को भरता है।
- **खेजड़ी वृक्ष मेला** - यह मेला जोधपुर के खेजड़ी में भाद्रपद शुक्ला दशमी को आयोजित होता है।
- **पाबूजी का मेला** - कोलू गांव (फलोदी, जोधपुर) में चैत्र अमावस्या को भरता है।
- **वीरपुरी का मेला** - यह मेला मंडोर (जोधपुर) में श्रावण मास के अंतिम सोमवार को भरता है।
- **चामुंडा माता का मेला** - इनके मंदिर में आश्विन शुक्ल नवमी को जोधपुर दुर्ग में एक प्रसिद्ध मेला लगता है।
- **बाबा रामदेव जी का मेला** - बाबा रामदेव जी का यह मेला मसूरिया (जोधपुर ग्रामीण) में भाद्रपद सुदी दूज को भरता है।

सिरोही के मेले

- **सारणेश्वर जी का मेला** - यह मेला सिरोही में भाद्रपद सुदी 11 एवं 12 को भरता है।
- **गाँतम ऋषि महादेव मेला** - यह मेला सिरोही जिले के चांदीला में अप्रैल माह में भरता है।
- **मारकंडेश्वर मेला** - यह मेला गरसिया समुदाय का मेला है। इसका आयोजन सिरोही जिले के अंजारी गांव में भाद्रपद शुक्ला एकादशी एवं वैशाख पूर्णिमा को होता है।
- **गोर मेला** - यह मेला सिरोही के आबूरोड के सियावा गांव में वैशाख सुदी चतुर्थी को लगता है।

राजसमंद जिले के मेले

- **देव झुलनी मेला** - यह मेला राजसमंद जिले के चारभुजा स्थान पर जलझूलनी एकादशी को भरता है।
- **चेतक अश्व मेला** - यह मेला भी राजसमंद जिले के हल्दीघाटी स्थान पर महाराणा प्रताप जयंती के अवसर पर भरता है।
- **जन्माष्टमी मेला** - यह मेला राजसमंद जिले के नाथद्वारा में जन्माष्टमी के अवसर पर भरता है।
- **अन्नकूट मेला** - यह मेला राजसमंद जिले के नाथद्वारा एवं कांकरोली में गोवर्धन पूजा के अवसर पर भरता है।

सीकर जिले के मेले

- **बालेश्वर मेला** - यह मेला सीकर जिले के बालेश्वर स्थान पर श्रावण माह में भरता है।
- **जीणमाता का मेला** - यह मेला सीकर जिले के रेवासा गांव में नवरात्रा चैत्र एवं आश्विन को लगता है।

- यह दरगाह अजमेर दुर्ग में है।
- मीरान साहब का मूल नाम मीर सैय्यद हुसैन खिंगसवार था। अजमेर दुर्ग में ही मीरान साहब के घोड़े की मजार है जिस पर ढाल चढ़ाकर लोग मन्नते मांगते हैं।
- NOTE-** मीरा साहब की दरगाह बूंदी में स्थित है।

❖ काकाजी की दरगाह (प्रतापगढ़)



- इसे कांठल का ताजमहल कहते हैं।
- ❖ **मलिक शाह की दरगाह (जालौर)**
- यह दरगाह जालौर दुर्ग में है जो सांप्रदायिकता के लिये जानी जाती है।
- इस दरगाह पर नाथ साधु भी चादर चढ़ाते हैं।
- ❖ **मीठेशाह की दरगाह - गागरोण**
- ❖ **सफदरजंग की दरगाह - अलवर**
- ❖ **अलाउद्दीन आलमशाह की दरगाह - तिजारा (खैरथल-तिजारा)**
- ❖ **तन्हा पीर की दरगाह - मण्डोर**
- ❖ **कबीर शाह की दरगाह - करौली**
- ❖ **कमरुद्दीन शाह की दरगाह - झुंझुनू**
- ❖ **पीर अब्दुल्ला की दरगाह - बांसवाडा**
- ❖ **दीवान शाह की दरगाह - कपासन (चित्तौड़गढ़)**

❖ किले एवं महल

- राजा - महाराजाओं के रहने व उनका खजाना सुरक्षित रखने के लिए दुर्ग / गढ़ / किला का निर्माण किया जाता था जिसमें अनेक महीनों का राशन व पानी का भण्डारण होता था।
- दुर्ग में महल, शस्त्रगार, राजकीय आवास, सैनिक छावनियाँ, तालाब, कुण्ड छतरियाँ आदि होते थे।
- भारत में सर्वप्रथम दुर्ग के अवशेष सिन्धु घाटी सभ्यता से मिले हैं जिसमें नगर के दो भाग थे-
(i) दुर्गीकृत (ii) अदुर्गीकृत दुर्ग
- भारत में सर्वाधिक दुर्ग महाराष्ट्र में जबकि राजस्थान का दुर्गों में तीसरा स्थान है।
- राजस्थान में सर्वाधिक दुर्ग जयपुर जिले में हैं।
- दुर्गों का सर्वप्रथम वर्गीकरण मनुस्मृति में हुआ है। मनुस्मृति में छः प्रकार के दुर्ग बताये गये हैं इनमें गिरि दुर्ग सर्वश्रेष्ठ है।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र में राज्य के सप्तांग सिद्धांत में सबसे महत्वपूर्ण दुर्ग को बताया है।

शुक्र नीति के अनुसार 9 प्रकार के दुर्ग बताए गए जो निम्न हैं-

- शुक्रनीति में सैन्य दुर्ग को सर्वश्रेष्ठ माना गया है।
- (1) **एरन दुर्ग**
 - यह दुर्ग खाई, काँटों तथा कठोर पथरों से - निर्मित होता है।
 - उदाहरण- रणथम्भौर दुर्ग, चित्तौड़ दुर्ग
- (2) **धान्वन (मरुस्थल) दुर्ग**
 - ये दुर्ग चारों ओर रेत के ऊँचे टीलों से घिरे होते हैं।
 - उदाहरण- जैसलमेर, बीकानेर व नागौर के दुर्ग।
- (3) **औदक दुर्ग (जलदुर्ग)**
 - ये दुर्ग चारों ओर पानी से घिरे होते हैं।
 - उदाहरण- गागरोण का दुर्ग, भैंसरोड़गढ़ दुर्ग।
- (4) **गिरि दुर्ग**
 - ये पर्वत एकांत में किसी पहाड़ी पर स्थित होता है तथा इसमें जल संचय का अच्छा प्रबंध होता है।
 - उदाहरण - कुम्भलगढ़, तारागढ़, जयगढ़, नाहरगढ़ (जयपुर), मेहरानगढ़ (जोधपुर)
- (5) **सैन्य दुर्ग**
 - जो व्यूह रचना में चतुर वीरों से व्याप्त होने से अभेद्य हो।
 - ये दुर्ग सर्वश्रेष्ठ समझे जाते हैं।
- (6) **सहाय दुर्ग**
 - जिसमें वीर और सदा साथ देने वाले बंधुजन रहते हो।
- (7) **वन दुर्ग**
 - जो चारों ओर वनों से ढका हुआ हो और कांटेदार वृक्ष हो।
 - उदाहरण- सिवाना दुर्ग, त्रिभुवनगढ़ दुर्ग, रणथम्भौर दुर्ग।

(8) पारिख दुर्ग

- वे दुर्ग जिनके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो।
- उदाहरण-लोहागढ़ दुर्ग, भरतपुर।

(9) पारिध दुर्ग

- जिसके चारों ओर पत्थर तथा मिट्टी से बनी बड़ी - बड़ी दीवारों का सुदृढ़ परकोटा हो।
- उदाहरण - चित्तौड़गढ़, कुम्भलगढ़ दुर्ग।
- ❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक विदेशी आक्रमण हुए - भटनेर (हनुमानगढ़)
- ❖ राजस्थान का वह दुर्ग जिस पर सर्वाधिक स्थानीय आक्रमण हुए-तारागढ़ (अजमेर)
- ❖ राजस्थान का सबसे बड़ा लिविंग फोर्ट- चित्तौड़ दुर्ग
- ❖ राजस्थान में सर्वाधिक बुर्जों वाला दुर्ग - सोनारगढ़ (जैसलमेर, कुल 99 बुर्ज)
- ❖ राजस्थान में अंग्रेजों द्वारा निर्मित दुर्ग - बोरसवाड़ा / टॉडगढ़ (ब्यावर)
- ❖ राजस्थान का सबसे पुराना दुर्ग - भटनेर (हनुमानगढ़)
- ❖ राजस्थान का सबसे नवीन दुर्ग - मोहनगढ़ (जैसलमेर)
- ❖ वर्ष 2013 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में राजस्थान के 6 दुर्ग शामिल किये - 1. चित्तौड़ 2. कुम्भलगढ़ (राजसमंद) 3. गागरोन (झालावाड़) 4. जैसलमेर 5. रणथम्भौर (सवाईमाधोपुर) 6. आमेर
- ❖ चित्तौड़गढ़ का किला



- **उपनाम** - चित्रकूट, राजस्थान का गौरव, दक्षिणी - पूर्वी द्वार, दुर्गों का दुर्ग, दुर्गों का सिरमौर, दुर्गों का तीर्थस्थल,
- इस किले का निर्माण चित्रांगद मौर्य ने किया था। (कुमारपाल प्रबन्ध के अनुसार)।
- राणा कुम्भा को इस दुर्ग का आधुनिक निर्माता माना जाता है।
- यह दुर्ग दिल्ली मालवा व गुजरात के रास्ते पर स्थित है जिसका सामरिक महत्व सर्वाधिक है।
- 734 ई. में बप्पा रावल ने मान मौर्य को हराकर चित्तौड़ के किले पर अधिकार कर लिया।
- 1559 ई. में उदयपुर की स्थापना तक चित्तौड़ मेवाड़ की राजधानी रहा है।
- अबुल फजल ने इस दुर्ग के बारे में कहा है "गढ़ तो चित्तौड़गढ़ बाकी सब गढ़ैया।"

- इस दुर्ग को राजस्थान का दक्षिणी प्रवेश द्वार व मालवा का प्रदेश द्वारा कहते हैं।
- यह दुर्ग धान्वन दुर्ग को छोड़कर सभी श्रेणी में शामिल है।
- यह एकमात्र दुर्ग है जिसमें कृषि होती थी।
- यह दुर्ग गम्भीरी व बेड़च नदी के संगम पर स्थित राजस्थान का क्षेत्रफल में सबसे बड़ा दुर्ग है।
- यह राजस्थान का सबसे बड़ा आवासीय किला है।
- यह दुर्ग मेसा पठार पर स्थित है जिसकी आकृति ढेल मछली के समान है।
- इस दुर्ग में प्रतिवर्ष चैत्र कृष्ण एकादशी को जौहर मेले का आयोजन किया जाता है।
- इस दुर्ग में स्थित प्रमुख जल स्रोतों में घी- तेल बावड़ी, कातण बावड़ी, जयमल - फत्ता तालाब, गौमुख कुण्ड, हाथीकुण्ड, सूर्यकुण्ड, भीमतल कुण्ड, रामकुण्ड व चित्रांगद मौर्य तालाब प्रमुख हैं।
- इस दुर्ग में राजस्थान में सर्वाधिक 3 साके हुए जो निम्न हैं-

प्रथम साका वर्ष 1303 ई. में हुआ जब रत्नसिंह व अलाउद्दीन के मध्य युद्ध हुआ जिसमें रत्नसिंह ने केसरिया तथा उसकी रानी ने पद्मिनी ने जौहर किया।

द्वितीय साका वर्ष 1534-35 ई. में हुआ जब विक्रमादित्य के सेनापति बाघसिंह रावत व गुजरात के शासक बहादुरशाह के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति बाघसिंह रावत के नेतृत्व में केसरिया तथा राणा सांगा की रानी कर्मावती के नेतृत्व में जौहर हुआ।

तृतीय साका वर्ष 1567-68 ई. में हुआ जब दिल्ली के बादशाह अकबर व राणा उदयसिंह के सेनापति जयमल राठौड़ व फत्ता सिसोदिया के मध्य युद्ध हुआ जिसमें सेनापति जयमल - फत्ता के नेतृत्व में केसरिया तथा गुलाब कंवर व फूल कंवर के नेतृत्व में जौहर हुआ।

➤ इस दुर्ग में सात प्रवेश द्वार हैं-

1. पाइन पोळ / पावटन पोळ - यहाँ देवलिया के रावत बाघसिंह की छत्री है।
2. भैरों पोळ - यहाँ कल्ला राठौड़ की 4 खम्भों तथा, जयमल राठौड़ की 16 खम्भों की छतरी है।
3. हनुमान पोळ
4. लक्ष्मण पोळ
5. जोड़न पोळ
6. त्रिपोलिया पोळ
7. रामपोळ - यहाँ फत्ता सिसोदिया का स्मारक बना हुआ है।

❖ दुर्ग में स्थित दर्शनीय प्रमुख स्थल

- **कुम्भा द्वारा निर्मित-** कुम्भा स्वामी का मंदिर, श्रृंगार चंवरी का मंदिर, विजय स्तम्भ, कीर्ति स्तम्भ, चार दीवार, सात द्वार
- मोकल ने समिद्वेश्वर मंदिर का पुनर्निर्माण करवाया।
- बनवीर ने नवलखा भण्डार / महल (यहाँ पर स्वामिभक्त पन्नाधाय ने अपने पुत्र चंदन का बलिदान दिया) व तुलजा भवानी का मंदिर बनवाया।



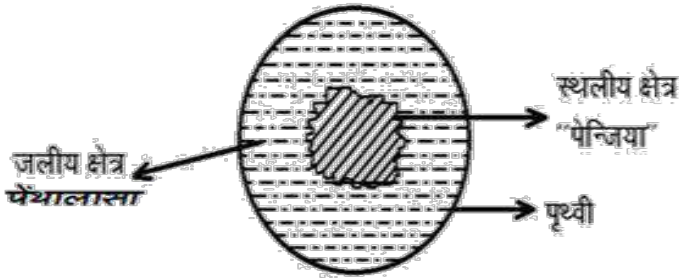
राजस्थान का भूगोल

अध्याय - 1

राजस्थान - एक सामान्य परिचय

(क) राजस्थान की उत्पत्ति / निर्माण :-

(अल्फ्रेड वेगनर के महाद्वीपीय विस्थापन सिद्धांत के अनुसार)



1. स्थल (पेंजिया)

2. जल (पेंथालासा)

• **स्थलीय क्षेत्र को "पेंजिया"** के नाम से जानते थे तथा शेष बचे हुए भाग को (**जल वाले क्षेत्र को**) "**पेंथालासा**" के नाम से जानते थे।

• **पेंजिया (स्थलीय क्षेत्र)** सभी महाद्वीपों को संयुक्त रूप से पेंजिया कहा जाता है।

- वर्तमान में दो भागों में विभक्त है।

✓ **अंगारालैंड / लॉरेशिया** - उत्तरी भाग में उत्तरी अमेरिका, यूरोप और उत्तरी एशिया महाद्वीपों का निर्माण हुआ। इस **स्थलीय क्षेत्र को "अंगारा लैंड / यूरेशियन प्लेट"** के नाम से जानते हैं।

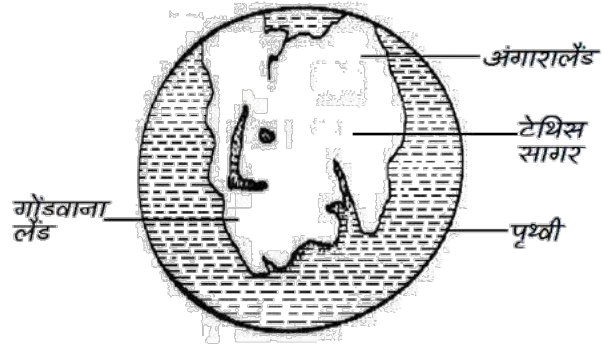
✓ **गोंडवानालैंड** - इसका दूसरा भाग (दक्षिणी भाग) में दक्षिणी अमेरिका, दक्षिणी एशिया, अफ्रीका तथा अंटार्कटिका महाद्वीपों का निर्माण हुआ, इस क्षेत्र को "**गोंडवाना लैंड**" के नाम से जानते हैं।

• दोनों प्लेटों के बीच में विशाल सागर था जिसे "**टेथिस सागर**" के नाम से जानते थे।

• **विशेष नोट:-** राजस्थान का पश्चिमी रेगिस्तान तथा रेगिस्तान में स्थित खारे पानी की झीलें "**टेथिस सागर**" के अवशेष हैं तथा राजस्थान का मध्यवर्ती पहाड़ी क्षेत्र (अरावली पर्वतमाला) एवं दक्षिण पूर्वी पठारी भाग "**गोंडवाना लैंड**" प्लेट के हिस्से हैं।

• **पेंथालासा** - सभी महासागरों को संयुक्त रूप से पेंथालासा कहा गया।

• **राजस्थान का निर्माण** - गोंडवानालैंड एवं टेथिस सागर से हुआ है।



✓ **गोंडवानालैंड** से - अरावली प्रायद्वीपीय (सबसे प्राचीनतम) भाग एवं हाड़ौती पठार का निर्माण हुआ।

✓ **टेथिस सागर** से - मरुस्थलीय प्रदेश एवं पूर्वी मैदान (सबसे नवीनतम) निर्माण हुआ।

नोट - भारत के प्रायद्वीपीय पठार का हिस्सा - राजस्थान के अरावली प्रायद्वीपीय भाग एवं हाड़ौती पठार का निर्माण हुआ।

✓ **भारत के उत्तरी विशाल मैदान का हिस्सा** - राजस्थान के मरुस्थलीय प्रदेश एवं पूर्वी मैदान निर्माण हुआ।

राजस्थान एकीकरण के चतुर्थ चरण (30 मार्च 1949) को वृहद् राजस्थान संघ में अधिकांश रियासतों के विलय हो जाने के कारण 30 मार्च को राजस्थान दिवस के रूप में मनाते हैं।

• राजस्थान को संवैधानिक रूप से राजस्थान नाम का दर्जा - 26 जनवरी 1950 (प. सत्यनारायण राव समिति की सिफारिश पर)

• राजस्थान का वर्तमान स्वरूप (**1 नवम्बर 1956**) को अस्तित्व में आया।

- (1 नवम्बर 1956) को राजस्थान में 26 जिले थे।

- (5) संभाग 1. जयपुर संभाग

2. जोधपुर संभाग

3. बीकानेर संभाग

4. उदयपुर संभाग

5. कोटा संभाग

वर्तमान राजस्थान में 41 जिले एवं 7 संभाग हैं।

➤ **26 वाँ जिला** - अजमेर - 1 नवम्बर, 1956

➤ **27 वाँ जिला** - धौलपुर - 15 अप्रैल, 1982, यह भरतपुर से अलग होकर नया जिला बना।

➤ **28 वाँ जिला** - बारां - 10 अप्रैल, 1991, यह कोटा से अलग होकर नया जिला बना।

➤ **29 वाँ जिला** - दौसा - 10 अप्रैल, 1991, यह जयपुर से अलग होकर नया जिला बना।

➤ **30 वाँ जिला राजसमंद** - 10 अप्रैल, 1991, यह उदयपुर से अलग होकर नया जिला बना।

➤ **31 वाँ जिला** - हनुमानगढ़ - 12 जुलाई, 1994, यह श्रीगंगानगर से अलग होकर नया जिला बना।

- **32 वाँ जिला करौली** 19 जुलाई, 1997, यह सवाई माधोपुर से अलग होकर नया जिला बना।
- **33 वाँ जिला - प्रतापगढ़ - 26 जनवरी, 2008,**
- प्रतापगढ़ जिला तीन जिलों से अलग होकर नया जिला बना।
- ✓ **चित्तौड़गढ़** - छोटीसादड़ी, आरनोद, प्रतापगढ़ तहसील
- ✓ **उदयपुर** - धारियाबाद तहसील
- ✓ **बाँसवाड़ा**- पीपलखुट तहसील
- ✓ प्रतापगढ़ जिला परमेश चन्द कमेटी की सिफारिश पर बनाया गया।
- ✓ प्रतापगढ़ जिले ने अपना कार्य 1 अप्रैल, 2008 से शुरू किया।
- ✓ **प्रतापगढ़ को प्राचीन काल में कांठल व देवला / देवलीया के नाम से जाना जाता था।**

नए जिलों का निर्माण (34 से 50)

- निर्माण की घोषणा बजट 2022-23
- घोषणा 17 मार्च 2023 (19 जिले एवं 3 संभाग)
- **रामलुभाया समिति** के सुझावों मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने 19 और नए जिलों बनाने की घोषणा की। इसके साथ ही राजस्थान में जिलों की संख्या 33 से बढ़कर 50 हो गयी तथा 3 नये संभाग बनाये गए जिससे संभागों की संख्या 7 से बढ़कर 10 हो गयी।

3 नए संभाग इस प्रकार हैं -

- बांसवाड़ा, पाली व सीकर
- अधिसूचना 5 अगस्त 2023
- प्रकाशित 6 अगस्त 2023
- लागू 7 अगस्त 2023

19 नए जिले निम्नलिखित हैं-

1. अनूपगढ़	2. फलोंदी
3. जोधपुर ग्रामीण	4. जोधपुर शहरी
5. बालोतरा	6. सांचौर
7. सलुम्बर	8. शाहपुरा
9. डीडवाना-कुचामन	10. नीम का थाना
11. कोटपुतली-बहरोड़	12. खैरथल-तिजारा
13. डीग	14. जयपुर शहर
15. जयपुर ग्रामीण	16. गंगापुर सिटी
17. दुदू	18. ब्यावर
19. केकड़ी	

वर्तमान स्थिति -

- नए जिलों के पुनर्गठन के सम्बन्ध में समिति का गठन -
- ✓ गहलोत सरकार में बने 19 जिले और 3 संभागों के फैसले पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने प्रदेश में जिलों के

पुनर्गठन पर आईएस ललित के. पंवार की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया।

- ✓ भजनलाल सरकार ने 12 जून को नये जिलों के रिव्यू के लिए कैबिनेट सब-कमेटी बनायी जिसमें -
- अध्यक्ष - डॉ. प्रेम चंद बैरवा (मदन दिलावर बाद में अध्यक्ष बनाये गए)

अन्य सदस्य -

1. राज्यवर्धन सिंह राठौड़ (उद्योग मंत्री) 3. हेमंत मीणा (राजस्व मंत्री)
2. कन्हैयालाल चौधरी (PHED मंत्री) 4. सुरेश सिंह रावत (जल संसाधन मंत्री)
- 28 दिसंबर 2024 को मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की अध्यक्षता में हुई कैबिनेट बैठक में 9 जिलों और 3 संभागों को निरस्त करने की घोषणा की।
- 29 दिसम्बर 2024 को जारी अधिसूचना के अनुसार वर्तमान में राजस्थान में 41 जिले व 7 संभाग हैं।
- यथावत रखे जिले -
- बालोतरा, ब्यावर, डीग, डीडवाना-कुचामन, खैरथल-तिजारा, कोटपुतली बहरोड़, फलोंदी, सलुम्बर

निरस्त किए गए जिले:

- अनूपगढ़, जयपुर ग्रामीण, जोधपुर ग्रामीण, दुदू, केकड़ी, नीम का थाना, गंगापुर सिटी, सांचौर, शाहपुरा
- निरस्त किए गए संभाग:**
- बांसवाड़ा, पाली, सीकर
- वर्तमान राजस्थान में 41 जिले एवं 7 संभाग हैं।

राजस्थान के 41 जिले



खैरथल-तिजारा - (नया नाम - भर्तृहरि नगर)

राजस्थान के संभाग

राजस्थान के संभाग और उनमें सम्मिलित जिले -

- 30 मार्च 1949 को राजस्थान में संभागीय व्यवस्था की शुरुआत हुई थी।
- शुरुआत में राजस्थान में 5 संभाग (जयपुर, जोधपुर, कोटा, उदयपुर, बीकानेर) थे।

- 24 अप्रैल 1962 को संभागीय व्यवस्था को तत्कालीन मुख्यमंत्री मोहनलाल सुखाड़िया ने निरस्त/समाप्त कर दिया।
- संभागीय व्यवस्था की पुनः शुरुआत 26 जनवरी 1987 को तत्कालीन मुख्यमंत्री हरिदेव जोशी ने की तथा अजमेर को जयपुर से अलग कर छठा संभाग बनाया।
- 4 जून 2005 को तत्कालीन मुख्यमंत्री श्रीमती वसुंधरा राजे ने भरतपुर को सातवाँ संभाग बनाया।
- वर्तमान राजस्थान में 7 संभाग निम्न हैं।

- शीत ऋतु के प्रारम्भ के साथ सूर्य दक्षिणायन होने लगता है जिस कारण तापमान तेजी से घटने लगता है।
- 22 दिसम्बर को जब सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध में स्थित मकर रेखा पर लम्बवत् चमकता है, तो उत्तरी गोलार्द्ध में सूर्य की किरणें तिरछी पड़ती हैं जिस कारण उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित सभी देशों में शीत ऋतु का समय शुरू होता है।
- उत्तरी एशिया व पाकिस्तान (पेशावर) में उच्च वायुदाब के केन्द्र बनते हैं तथा इसके विपरीत समुद्र की ओर निम्न वायुदाब का क्षेत्र बनता है। फलस्वरूप हवाएँ स्थल से जल की ओर बहती हैं।

मावठ - भूमध्य सागरीय चक्रवातों (पश्चिमी विक्षोभों) के माध्यम से पश्चिम दिशा से आने वाली पवनें भारत के उत्तरी पश्चिमी भाग में शीतकालीन वर्षा करती हैं, जिसे 'मावठ' कहते हैं।

- यह मावठ की वर्षा 'रबी की फसलों' के लिए अनुकूल है अतः इसे 'सुनहरी बूंदों की वर्षा / Golden Drops' भी कहते हैं।

राजस्थान की जलवायु की विशेषताएँ

- वर्षा का असमान एवं अपर्याप्त वितरण यहाँ की जलवायु की प्रमुख विशेषता है। इसी कारण राज्य के पश्चिमी क्षेत्र में वनस्पति तथा मानव का घनत्व न्यूनतम तथा पूर्वी क्षेत्र की ओर अधिकतम होता है। वर्षा की असमानता के चलते यहाँ अकाल व सूखा पड़ता ही रहता है।
- सामयिक वर्षा, भिन्न जलवायु प्रदेश, तापमान में विविधता, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, आर्द्रता में अन्तर आदि।
- राजस्थान में वर्षा की मात्रा व समय निश्चित नहीं है। जहाँ झालावाड़ में 40 दिन तक बारिश होती है। वहीं जैसलमेर में वर्षा के दिनों की संख्या मात्र 5 दिन है।
- राजस्थान में मानसून का प्रवेश 25 जून के लगभग माना जाता है। (पहले 15 जून)
- राजस्थान की समस्त वर्षा गर्मियों में जुलाई व अगस्त में होती है तथा वर्षा की कुछ मात्रा दिसम्बर व जनवरी में मावठ (शीतकालीन वर्षा) के रूप में प्राप्त होती है।-
 - गर्मियों में राजस्थान में सर्वाधिक दैनिक तापान्तर वाला जिला जैसलमेर है, तथा गर्मियों में सर्वाधिक धूल भरी आँधिया श्रीगंगानगर जिले में चलती है।

अध्याय - 4

(अपवाह तंत्र) - नदियाँ, झीलें एवं बाँध

अपवाह तंत्र -

- जब नदी एक स्थान से दूसरे स्थान पर जल का प्रवाह करती है, तो उसे अपवाह तंत्र कहते हैं।
- राजस्थान के अपवाह तंत्र को हम दो भागों में विभक्त करते हैं -

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण
2. संगम के आधार पर वर्गीकरण

1. क्षेत्र के आधार पर वर्गीकरण को चार भागों में बाँटा गया है -

- (अ) **उत्तरी व पश्चिमी राजस्थान** - इस तंत्र में लूनी, जवाई, सूकड़ी, बांडी, सागी जोजड़ी घग्घर, कातली नदियाँ शामिल होती हैं।
- (ब) **दक्षिण व पश्चिमी राजस्थान** - इसमें पश्चिमी बनास, साबरमती, वाकल, व सेई नदियाँ शामिल होती हैं।
- (स) **दक्षिणी राजस्थान** - इसमें माही, सोम, जाखम, अनास मोरेन नदियाँ शामिल होती हैं।
- (द) **दक्षिण - पूर्वी राजस्थान** - इसमें चंबल, कुनु, पार्वती, कालीसिंध, कुराल, आहू, नेवज, परवन, मेज, गंभीरी, छोटी कालीसिंध, डीला, खारी, माशी, कालीसिल, मोरेल, डाई, सोहादरा आदि नदियाँ शामिल होती हैं।

2. संगम के आधार पर वर्गीकरण - इसी आधार पर नदियों को तीन भागों में बाँटा गया है

- (अ) **बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ :-** इस अपवाह तंत्र में प्रमुख नदियाँ शामिल होती हैं। जैसे चंबल, बनास, कालीसिंध, पार्वती, बाणगंगा, खारी, बेड़च, गंभीरी, मेनाल, कोठारी, आहू, कालीसिंध तथा परवन आदि। ये नदियाँ अरावली के पूर्व में बहती हैं इनमें कुछ नदियों का उद्गम स्थल अरावली का पूर्वी घाट तथा कुछ का मध्यप्रदेश का विंध्याचल पर्वत है। यह सभी नदियाँ अपना जल यमुना नदी के माध्यम से बंगाल की खाड़ी में ले जाती हैं।
- (ब) **अरब सागर में गिरने वाली नदियाँ** - इस अपवाह तंत्र में शामिल प्रमुख नदियाँ हैं। जैसे माही, सोम, जाखम, साबरमती, पश्चिमी बनास, लूनी, जोजड़ी, बांडी, सूकड़ी इत्यादि। पश्चिमी बनास, लूनी गुजरात के कच्छ के रण में विलुप्त हो जाती हैं, ये सभी नदियाँ अरब सागर की ओर अपना जल लेकर जाती हैं।

- (स) **अंतः प्रवाह वाली नदियाँ :-** काकनी, कांतली, साबी, घग्घर, मेंधा, बांडी, रूपनगढ़ इत्यादि

महत्त्वपूर्ण तथ्य -

राजस्थान की अधिकांश नदियों का प्रवाह क्षेत्र अरावली पर्वत की पूर्व में है।

- राजस्थान में चंबल तथा माही के अलावा अन्य कोई नदी बारह मासी नहीं है।
- राज्य में चूर, बीकानेर व फलोंदी तीन ऐसे जिले हैं जहाँ कोई नदी नहीं है।
- राज्य के 60% भू-भाग आंतरिक जल प्रवाह का विस्तार है।
- राज्य में बनास नदी का जल ग्रहण क्षेत्र सबसे बड़ा है।
- राज्य में सर्वाधिक नदियाँ कोटा संभाग में बहती हैं।
- राज्य की सबसे बड़ी नदी चंबल है।
- पश्चिमी राजस्थान की जीवन रेखा इंदिरा गांधी नहर परियोजना को कहते हैं।
- मारवाड़ की जीवन रेखा लूनी नदी को कहते हैं।
- बीकानेर की जीवन रेखा कंवर सेन लिफ्ट परियोजना को कहते हैं।
- राजसमंद की जीवन रेखा नंद समंद झील कहलाती है।
- भरतपुर की जीवन रेखा मोती झील है।
- आदिवासियों की या दक्षिणी राजस्थान की जीवन रेखा माही नदी को कहा जाता है।
- भारत सरकार द्वारा राजस्थान भूमिगत जल बोर्ड की स्थापना 1955 में की गई थी। इसका कार्यालय जोधपुर में है।
- पूर्णतः राजस्थान में बहने वाली सबसे लंबी नदी तथा सर्वाधिक जल ग्रहण क्षेत्र वाली नदी बनास है।

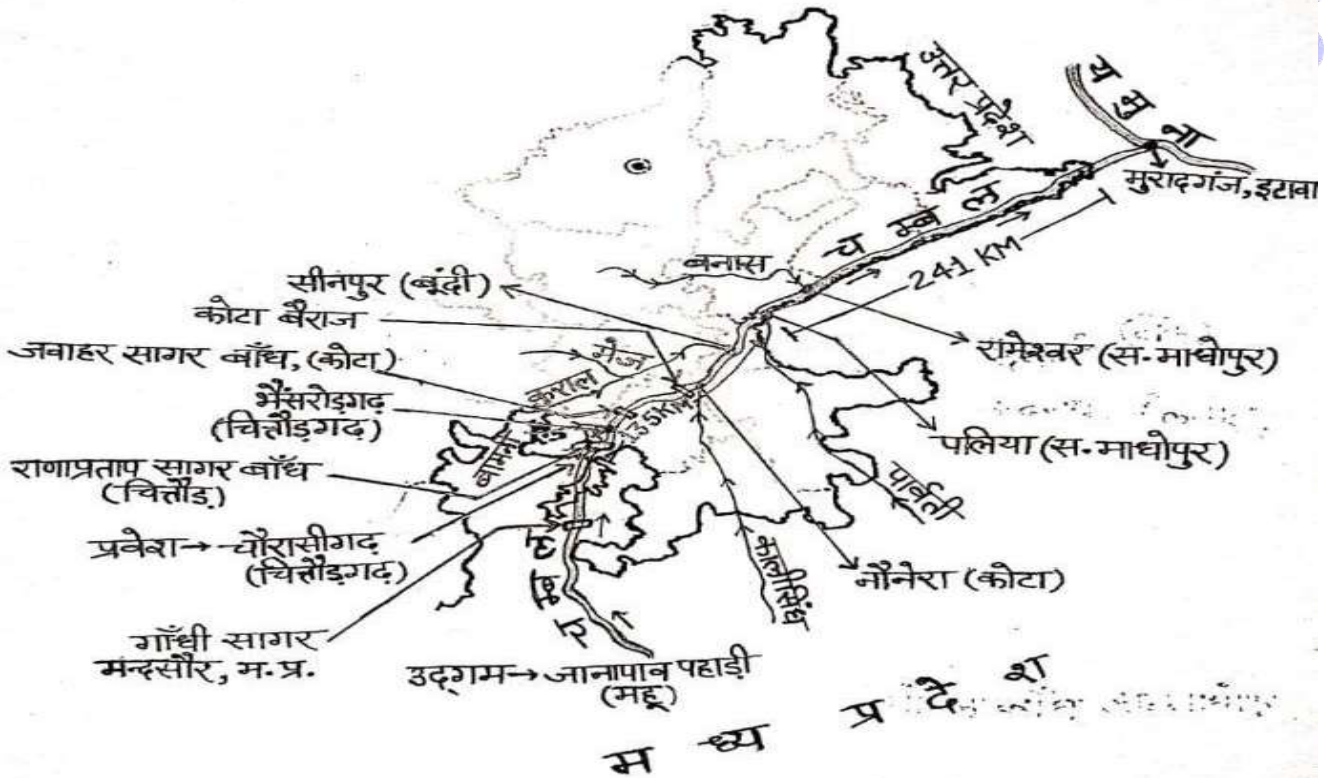
- अंतर्राज्य सीमा बनाने वाली एक मात्र नदी है चंबल, जो कि राजस्थान व मध्यप्रदेश की सीमा बनाती है।
- टोंक जिले की राजमहल नामक जगह पर बनास नदी, डाई नदी तथा खारी नदी के द्वारा त्रिवेणी संगम बनाया जाता है। यहाँ शिव एवं सूर्य की संयुक्त प्रतिमा स्थित है, जो मार्तंड भैरव मंदिर या देवनारायण मंदिर के नाम से जाना जाता है यहाँ नारायण सागर बाँध स्थित है।

बंगाल की खाड़ी में गिरने वाली नदियाँ-

1. चंबल नदी -

- अन्य नाम - जैसे - चर्मणवती नदी, कामधेनु नदी, बारह मासी नदी, नित्य वाहिनी नदी।
- इस नदी की लंबाई लगभग 1051 किलोमीटर है। यह नदी मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश अर्थात् 3 राज्यों में बहती है यह नदी मध्यप्रदेश में लगभग 320 किलोमीटर, राजस्थान में लगभग 322 किलोमीटर, उत्तरप्रदेश में लगभग 157 किलोमीटर बहती है तथा मध्यप्रदेश, राजस्थान व उत्तरप्रदेश के मध्य 252 किमी लम्बी अंतरराज्यीय सीमा बनाती है।

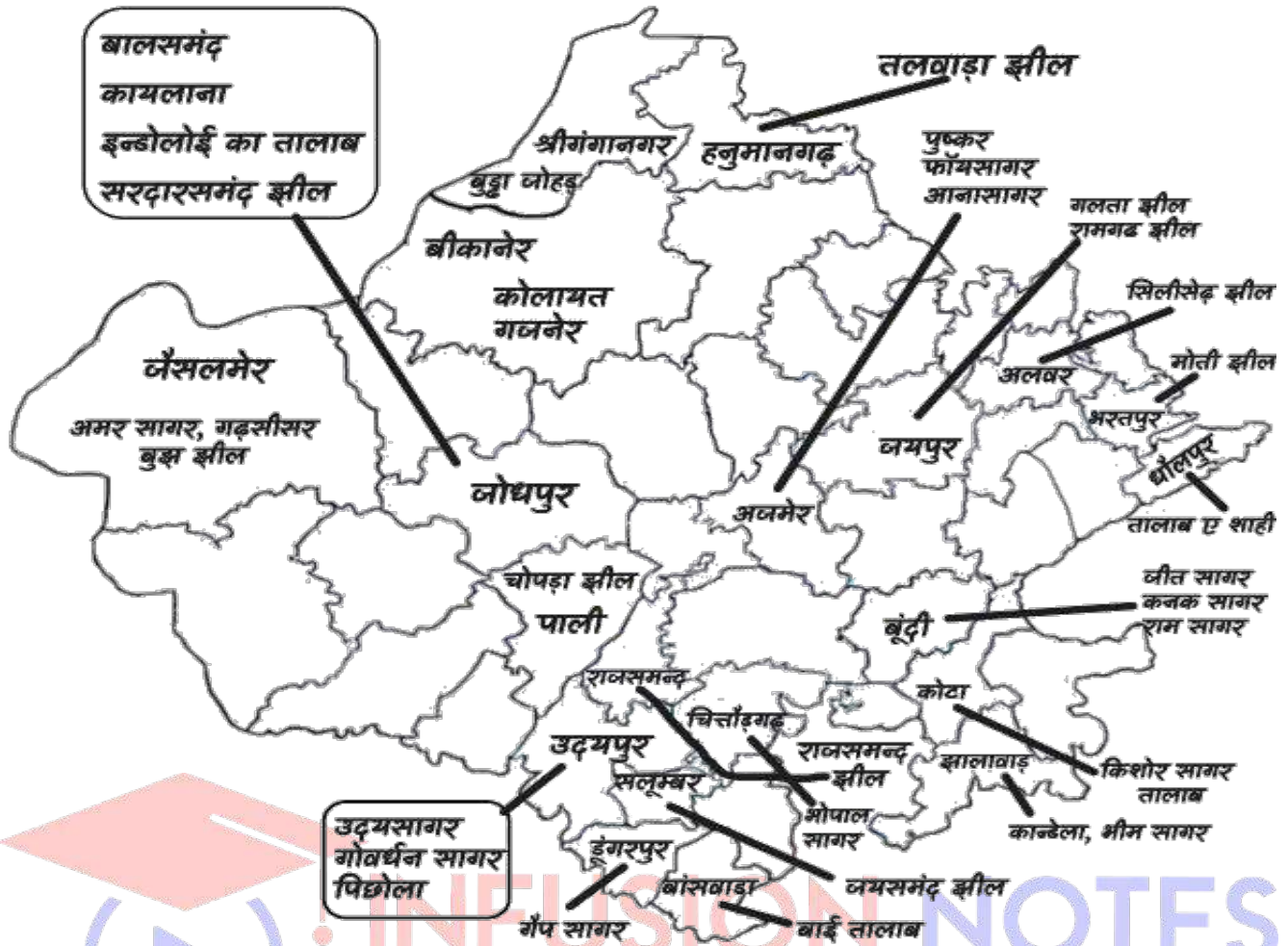
चम्बल एवं इसकी सहायक नदियाँ



- चंबल नदी :- उद्गम - मध्यप्रदेश के महु के निकट विंध्याचल पर्वतमाला में स्थित 616 मीटर ऊँची "जानापाव की पहाड़ी" से होता है।
- मध्यप्रदेश में मंदसौर जिला में स्थित रामपुरा भानपुरा के पठारों में स्थित इस नदी का सबसे बड़ा बाँध "गांधी सागर बाँध" बना हुआ है।

- यह नदी राजस्थान में सर्वप्रथम चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित चौरासीगढ़ नामक स्थान से प्रवेश करती है।
- इस नदी पर भैसरोड़गढ़ के समीप सबसे बड़ा सबसे ऊँचा जल प्रपात बना है जिसे चूलिया जल प्रपात (18 मी.) के नाम से जानते हैं।

राजस्थान में मीठे पानी की झीलें -



शोर्ट ट्रिक

राजस्थान की मीठे पानी की झीलों के नाम:-
“जयराज, अना, नडीसि कोका फतेह कर”

सूत्र	झीलें
जय	- जयसमन्द झील
राज	- राजसमन्द झील
अना	- अनासागर झील
न	- नक्की झील
डी	- डीडवाना झील
सि	- सिलीसेढ़ झील
को	- कोलायत झील
का	- कायलाना झील
फतेह	- फतेहसागर झील

विस्तृत वर्णन -

1. पुष्कर झील -

- राजस्थान राज्य के अजमेर जिले के पुष्कर नामक स्थान पर (अजमेर शहर से 11 किलो मीटर दूर) स्थित पुष्कर झील एक प्रसिद्ध झील है।
- ऐसा माना जाता है कि इस झील का निर्माण पुष्करणा ब्राह्मणों द्वारा करवाया गया था इसलिए इस झील का नाम "पुष्कर झील" पड़ा, लेकिन भौगोलिक मान्यताओं के

अनुसार इस झील का निर्माण ज्वालामुखी से हुआ है इसलिए इसे क्रेटर झील भी कहा जाता है।

- यह राजस्थान की प्राचीन, प्राकृतिक एवं सबसे पवित्र झील है।
- इस झील के किनारे प्रसिद्ध ब्रह्माजी का मंदिर स्थित है ऐसा माना जाता है कि ब्रह्माजी मंदिर में मूर्ति आद्यगुरु शंकराचार्य द्वारा स्थापित की गई थी। इस मंदिर का निर्माण दसवीं सदी में पंडित गोकुल चंद पारीक ने करवाया था। (नोट :- राजस्थान के बालोतरा जिले में आसोतरा नामक स्थान पर एक अन्य ब्रह्माजी का मंदिर है।)
- अन्य नाम-कोकण तीर्थ, तीर्थ स्थलों का मामा 52 घाट मंदिरों की नगरी, प्रयागराज का गुरु, हिन्दुओं का पांचवा तीर्थ स्थल इत्यादि।
- इस झील के किनारे कार्तिक मास की पूर्णिमा को मेला लगता है। यह मेला राजस्थान का सबसे बड़ा रंगीन मेला है जो प्रतिवर्ष कार्तिक पूर्णिमा को विशाल मेले के रूप में आयोजित किया जाता है। यह मेला राजस्थान में आय की दृष्टि से सबसे बड़ा मेला है।
- महाभारत के बाद पांडवों ने यहाँ स्नान किया था तथा कौरव व पांडवों का मिलन भी इसी झील के तट पर हुआ था।
- वेदव्यास जी ने महाभारत की रचना एवं वेदों का संहिताकरण इसी झील के किनारे किया था।

- पुष्कर झील में कुल 52 घाट हैं इसलिए इसे बावन घाटा के नाम से भी जाना जाता है इसमें एक महिला घाट भी है जो महिलाओं के स्नान के लिए बनवाया गया था जिसका निर्माण 1911 ई. में मैडम मैरी के द्वारा करवाया गया था। इस घाट को गाँधी घाट के नाम से जाना जाता है।
- इस झील के तट पर प्रसिद्ध बराह मंदिर है जिसका निर्माण आनाजी (अर्णोराज) के द्वारा करवाया गया था।
- इसी झील के तट पर द्रविड़ शैली में निर्मित रंगाजी रंगनाथ जी बैकुंठ मंदिर है।
- इसी झील के समीप रत्नागिरी पर्वत पर सावित्री मंदिर भी स्थित है।
- कालिदास ने अपने ग्रंथ "अभिज्ञान शाकुंतलम्" की रचना इसी झील के तट पर की थी।
- महात्मा गांधी की अस्थियां इसी झील में प्रवाहित की गई थी इसलिए इस झील को "गांधी घाट" के नाम से भी जाना जाता है।
- इसी झील के समीप आमेर के मानसिंह प्रथम द्वारा निर्मित मान पैलेस है वर्तमान में यहाँ मान पैलेस होटल का संचालन किया जा रहा है।
- इस झील के आस-पास छोटे-बड़े लगभग 400 मंदिर स्थित हैं इस कारण पुष्कर झील को मंदिरों की नगरी भी कहा जाता है।
- इस झील को सर्वाधिक हानि पहुंचाने वाला मुगल बादशाह औरंगजेब था।
- सन् 1705 ईस्वी में गुरु गोविंद सिंह इस झील के किनारे गुरु गोविंद साहब का पाठ किया था तथा सन् 1809 में इस झील का पुनर्द्वार मराठों के द्वारा करवाया गया था।
- 1997-98 ई. में कनाडा के सहयोग से यहाँ सफाई कार्य करवाया गया।
- पुष्कर के पंचकुण्ड को "मृगवन" घोषित किया गया है।

2. जयसमंद झील

- राज्य के सलूमबर जिले में स्थित जयसमंद झील को डेबर झील के नाम से भी जाना जाता है।
- इस झील का निर्माण गौतमी नदी, झामरी नदी तथा बगार नदी का पानी रोक कर मेवाड़ के राजा जयसिंह के द्वारा 1685 - 91 में करवाया।
- यह झील एशिया की दूसरी तथा राजस्थान की प्रथम मीठे पानी की सबसे बड़ी, कृत्रिम झील है।
- इस झील पर छोटे-बड़े कुल 7 टापू स्थित हैं जिन पर भील तथा मीणा जनजाति के लोग निवास करते हैं इनमें से सबसे बड़ा टापू "बाबा का भांगड़ा" है जबकि सबसे छोटा टापू "प्यारी" है।
- इस झील के एक टापू का नाम "बाबा का मगरा" भी है, जिस पर वर्तमान में एक होटल संचालित किया जा रहा है इस होटल का नाम आइसलैंड रिसोर्ट है।

- इस झील से सिंचाई के लिए दो नहरे निकलती हैं - इनमें से एक का नाम श्यामपुरा नहर और दूसरी भाट नहर है इन दोनों नहरों की लंबाई 324 किलो मीटर है।
- इस झील की लंबाई 15 किलो मीटर तथा चौड़ाई अधिकतम 8 किलोमीटर है।
- इस झील में 6 कलात्मक छतरियां एवं प्रसाद बने हुए हैं।
- जयसमंद झील से उदयपुर जिले को पीने के पानी की सुविधा उपलब्ध करवाई जा रही है।
- इस झील के तट पर नर्मदश्वर शिवालय, चित्रित हवा महल तथा रूठी रानी क महल स्थित है।

3. राजसमंद झील

- राजसमंद जिले में स्थित इस झील का निर्माण मेवाड़ के राजा राजसिंह के द्वारा गोमती नदी का पानी रोक कर सन् 1662 से 1680 के बीच में करवाया गया था। इस झील की कुल लंबाई लगभग 6.5 किलोमीटर तथा चौड़ाई लगभग 3 किलोमीटर है।
- यह राज्य में एकमात्र ऐसी झील है, जिसका नामकरण किसी जिले के नाम पर हुआ है।
- राजसमंद झील राज्य की दूसरी सबसे बड़ी मीठे पानी की कृत्रिम झील है।
- राजसमंद झील के तट पर एशिया की सबसे बड़ी प्रशस्ति "राज प्रशस्ति" 25 बड़े शिलालेखों पर उत्कीर्ण है। राज प्रशस्ति की रचना राजा "राजसिंह" के दरबारी कवि रणछोड़भट्ट तैलंग के द्वारा की गई थी। संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण इस प्रशस्ति पर 1917 श्लोक उत्कीर्ण हैं।
- राजसमंद झील के तट पर प्रसिद्ध द्वारकाधीश का मंदिर है यहीं पर वल्लभ संप्रदाय की पीठ भी स्थित है। यहाँ पर एक प्रसिद्ध त्यौहार मनाया जाता है जिसको "अन्नकूट महोत्सव" के नाम से जानते हैं।
- राजसमंद झील के तट पर "बिना पति के सती होने वाली "धेवर माता का मंदिर" स्थित है।
- इस झील को एक अन्य नाम "राजसमुद्र" के नाम से भी जानते हैं।
- इस झील को राज्य सरकार ने धार्मिक दृष्टि से पुष्कर की तरह पवित्र घोषित किया है अर्थात् राज्य सरकार ने इस झील को सबसे पवित्र झील घोषित किया है।

4. पिछोला झील

- राज्य के उदयपुर जिले में स्थित पिछोला झील का निर्माण सन् 1387-88 में राणा लाख के काल में एक पिछू/छिन्न नामक चिड़ीमार बंजारे ने अपने बँल की स्मृति (याद) में करवाया था। यह झील उदयपुर की सबसे प्राचीन तथा सबसे सुंदर झील है।
- सन् 1525 ईस्वी में राणा सांगा ने पिछोला झील का जीर्णोद्धार करवाया था इस झील को पक्का कराने का श्रेय राजा उदयसिंह को जाता है।
- पिछोला झील के तट पर एक जग मंदिर स्थित है। इस मंदिर का निर्माण कार्य 1551 में महाराणा अमर सिंह ने शुरू

अध्याय - 9

खनिज - धात्विक एवं अधात्विक

खनिज

- खनिज :- वे प्राकृतिक पदार्थ हैं जो कि भू-गर्भ से खनन क्रिया द्वारा बाहर निकाले जाते हैं। खनिज प्रमुखतया प्राकृतिक एवं रासायनिक पदार्थों के संयोग से निर्मित होते हैं।
- इनका निर्माण अर्जैविक प्रक्रियाओं के द्वारा होता है। सामान्य शब्दों में, वे सभी पदार्थ जो कि खनन द्वारा प्राप्त किए जाते हैं, खनिज कहलाते हैं।
- जैसे - लोहा, अभ्रक, कोयला, बॉक्साइट (जिससे एल्युमिनियम बनता है), नमक (पाकिस्तान व भारत के अनेक क्षेत्रों में खान से नमक निकाला जाता है), जस्ता, चूना पत्थर इत्यादि।
- ऐसे खनिज जिनमें धातु की मात्रा अधिक होती है तथा उनसे धातुओं का निष्कर्षण करना आसान होता है उन्हें अयस्क कहते हैं।

जैसे-

धातु	अयस्क
हेमेटाइट	लोहा
बॉक्साइट	एल्युमिनियम
गैलेना	सीसा
डोलोमाइट	मैग्नीशियम
सिडेराइट	लोहा
मेलाकाइट	तांबा

खनिजों के प्रकार

खनिज तीन प्रकार के होते हैं; धात्विक, अधात्विक और ऊर्जा खनिज।

धात्विक खनिज:

लौह धातु: लौह अयस्क, मैंगनीज, निकेल, आदि।
अलौहधातु: तांबा, लैंड, टिन, बॉक्साइट, कोबाल्ट आदि।
बहुमूल्य खनिज: सोना, चाँदी, प्लेटिनम, आदि।

अधात्विक खनिज:

अभ्रक, लवण, पोटाश, सल्फर, ग्रेनाइट, चूना, पत्थर, संगमरमर, बलुआ, पत्थर, आदि।

ऊर्जा खनिज: कोयला, पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस।

खनिज के भंडार:

- आग्नेय और स्पांतरित चट्टानों में :- इस प्रकार की चट्टानों में खनिजों के छोटे जमाव शिराओं के रूप में, और बड़े जमाव परत के रूप में पाये जाते हैं।
- जब खनिज पिघली हुई या गैसीय अवस्था में होती है तो खनिज का निर्माण आग्नेय और स्पांतरित चट्टानों में होता है।
- पिघली हुई या गैसीय अवस्था में खनिज दरारों से होते हुए भूमि की ऊपरी सतह तक पहुँच जाते हैं।

<https://www.infusionnotes.com/>

उदाहरण: टिन, जस्ता, लैंड, आदि।

अवसादी चट्टानों में: - इस प्रकार की चट्टानों में खनिज परतों में पाये जाते हैं।

1. मुख्यतः अधात्विक ऊर्जा खनिज पाए जाते हैं।

उदाहरण: कोयला, लौह अयस्क, जिप्सम, पोटाश लवण और सोडियम लवण, आदि।

धरातलीय चट्टानों के अपघटन के द्वारा: - जब अपरदन द्वारा शैलों के घुलनशील अवयव निकल जाते हैं तो बचे हुए अपशिष्ट में खनिज रह जाता है। बॉक्साइट का निर्माण इसी तरह से होता है।

जलोढ़ जमाव के रूप में: - इस प्रकार से बनने वाले खनिज नदी के बहाव द्वारा लाए जाते हैं और जमा होते हैं। इस प्रकार के खनिज रेतीली घाटी की तली और पहाड़ियों के आधार में पाए जाते हैं। ऐसे में वो खनिज मिलते हैं जिनका अपरदन जल द्वारा नहीं होता है।

उदाहरण :- सोना, चाँदी, टिन, प्लेटिनम, आदि।

महासागर के जल में: - समुद्र में पाए जाने वाले अधिकतर खनिज इतने विरल होते हैं कि इनका कोई आर्थिक महत्व नहीं होता है। लेकिन समुद्र के जल से साधारण नमक, मैग्नीशियम और ब्रोमीन निकाला जाता है।

राजस्थान में खनिज संसाधन -

राजस्थान क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य है यहाँ पाई जाने वाली अधिक विविधताओं के कारण यह राज्य खनिज संपदा की दृष्टि से एक संपन्न राज्य है। और इसी वजह से इसे "खनिजों का अजायबघर" भी कहा जाता है।

- खनिज भंडार की दृष्टि से राजस्थान का देश में झारखंड के बाद दूसरा स्थान आता है जबकि खनिज उत्पादन मूल्य की दृष्टि से झारखंड, मध्यप्रदेश, गुजरात, असम के बाद राजस्थान का पांचवा स्थान है। राजस्थान में देश का कुल खनन क्षेत्र का 5.7% क्षेत्रफल आता है। देश में **सर्वाधिक खाने राजस्थान में स्थित है।** देश के कुल खनिज उत्पादन में राजस्थान का योगदान 22% है।
- राजस्थान में खनिज मुख्य रूप से अरावली में पाए जाते हैं। अतः इसे खनिजों का भण्डारगृह कहा जाता है।

राजस्थान की भूमिका :-

भंडारण में	उत्पादन में	विविधता में	आय में
द्वितीय स्थान	द्वितीय स्थान	प्रथम स्थान	पाँचवा स्थान

राजस्थान में 81 प्रकार के खनिज पाए जाते हैं जिसमें से 58 प्रकार के खनिजों का खनन किया जाता है

1. ऐसे खनिज जिन पर राजस्थान का एकाधिकार है - पन्ना, जास्पर, तामड़ा, वोलेस्टोनाइट
2. ऐसे खनिज जिनके उत्पादन में राजस्थान का प्रथम स्थान है -

जस्ता - 97%, फ्लोराइड 96%, एस्बेस्टस 96%, रॉकफोस्फेट 95%, जिप्सम 94 % चूना पत्थर 98%, खड़िया मिट्टी 92%, घीया पत्थर 90%, चांदी 80%, मकराना (मार्बल) 75%, सीसा 75%, फेल्सपार 75%, टंगस्टन 75%, कैल्साइट 70%, फायर क्ले 65%, ईमारती पत्थर 60%, बेंटोनाइट 60%, कैंडमियम 60%

3. वे खनिज जिनकी राजस्थान में कमी है - लोहा, कोयला, मैंगनीज, खनिज तेल, ग्रेफाइट

राजस्थान में पाए जाने वाले खनिजों को तीन प्रकारों में बांटा जा सकता है -

- धात्विक खनिज** - लौह अयस्क, मैंगनीज, टंगस्टन, सीसा, जस्ता, तांबा, चांदी इत्यादि।
 - अधात्विक खनिज** - अभ्रक, एस्बेस्टस, फेल्सपार, बालुका मिट्टी, चूना पत्थर, पन्ना, तामड़ा इत्यादि।
 - ईंधन** - कोयला, पेट्रोलियम, खनिज इत्यादि।
- खनिजों की दृष्टि से राजस्थान में अरावली प्रदेश और पठारी प्रदेश काफी समृद्ध हैं।

धात्विक खनिज -

- लोहा** - राजस्थान में लोहा मुख्य रूप से अरावली के उत्तर-पूर्व एवं दक्षिण-पूर्व में पाया जाता है। लौहा अयस्क चार प्रकार का होता है-

- मैग्नेटाइट - 74 %
- हेमेटाइट - 65 %
- लिमोनाइट - 50 %
- सिडेराइट - 40%

राजस्थान में मुख्य रूप से लोहे का उत्पादन निम्न स्थानों पर होता है एवं राजस्थान में हेमेटाइट व लिमोनाइट लौह अयस्क पाया जाता है।

प्रमुख खान-

- मोरिजा- बानोल- सामोद, जयपुर
- नीमला- राइसेला- लालसोट, दौसा
- सिंधाना- डाबला- झुंझुनूं
- नीम का थाना
- थूर हुण्डेर - उदयपुर
- नाथरा की पाल - सलूमबर
- राजस्थान में सबसे अधिक लौहे का उत्पादन जयपुर जिले से होता है। यह हेमेटाइट प्रकार का है।**

- राजस्थान के प्रमुख लोहा उत्पादक क्षेत्र -**

क्र.स.	जिला	स्थान
1.	जयपुर	मोरीजा - बानोल, तातेरी भट्टों की गली, बागावास
2.	सीकर	राजपुरा-नानावास, टोडा, चिपलाटा रामपुर डाबला नीमकाथाना
3.	दौसा	नीमला-राइसेला, लालसोट

4.	भीलवाड़ा	बिगोद पादरपाल
5.	झालावाड़	डग,
6.	इंगरपुर	लोहारिया, तलवारा
7.	उदयपुर	थूर हुण्डेर, नाथरा की पाल

2. सीसा-जस्ता :-

राजस्थान में भारत का 80 % सीसा और 99% जस्ता का उत्पादन होता है

सीसे जस्ते के अयस्क को गैलेना कहा जाता है। यह अयस्क मिश्रित रूप में मिलने के कारण इसे जुड़ा खनिज भी कहते हैं।

- राजस्थान में जिन स्थानों पर सीसे - जस्ते का उत्खनन होता है उन्हीं स्थानों से चाँदी व तांबा का उत्खनन होता है।

प्रमुख खान-

- जावर खान- उदयपुर**
→ यह देश की सबसे बड़ी जस्ते की खान है।

- राजपुरा-दरीबा- राजसमंद
- पुर- दरीबा- भीलवाड़ा
- रामपुरा- आगूचा- भीलवाड़ा
- गुढा किशोरीदास - अलवर
- चौथ का बरवाड़ा - सवाई माधोपुर
- मोचिया - मगरा - उदयपुर
- रेल- मगरा- राजसमंद

→ राजस्थान में जस्ते के उत्खनन के लिए दो संयंत्र स्थापित किये गये हैं।

- हिंदुस्तान जिंक लिमिटेड, उदयपुर :-** इसकी स्थापना केन्द्र सरकार के द्वारा की गई जो मुख्य रूप से देवारी नामक स्थान पर उत्खनन का कार्य करता है।

- चन्देरिया सुपर जिंक स्मेल्टर, चित्तौड़गढ़ :-** इसकी स्थापना ब्रिटेन के सहयोग से की गई जो मुख्य रूप से जस्ते का उत्खनन कार्य करता है।

→ राजस्थान में सीसा गलाने का संयंत्र न होने के कारण सीसे के अयस्क को टुंडू बिहार भेजा जाता है।

→ राजसमंद के दरीबा, नामक स्थान पर सीसा गलाने का संयंत्र स्थापित किया गया है लेकिन इसकी क्षमता कम होने के कारण सीसे के बचे हुए अयस्क को बिहार भेजा जाता है।

3. चाँदी :- देश में सबसे अधिक चाँदी का उत्पादन राजस्थान में होता है।

प्रमुख खान

- राजपुरा - दरीबा - राजसमंद
- रामपुरा - आगूचा- भीलवाड़ा

4. सोना :- राजस्थान में सबसे अधिक सोने के भण्डार बाँसवाड़ा जिले में पाया जाता है।

इसके अलावा दौसा जिले में भी सोने के क्षेत्रों का पता लगाया गया है।

बाँसवाड़ा के प्रमुख खान

- आनन्दपुर - भूकिया क्षेत्र

अध्याय - 1

राज्यपाल

- ✦ भारतीय संविधान के भाग-VI में राज्य शासन के लिए प्रावधान किया गया है। यह प्रावधान पहले जम्मू-कश्मीर को छोड़कर सभी राज्यों के लिए लागू होता था लेकिन अब सभी राज्यों के लिए लागू होता है।
- ✦ राज्य में राज्यपाल का उसी प्रकार से स्थान है जिस प्रकार से देश में राष्ट्रपति का (कुछ मामलों को छोड़कर)।
- ✦ **अनुच्छेद 153** के तहत प्रत्येक राज्य के लिए एक राज्यपाल होगा। **लेकिन 7वें संविधान संशोधन-1956 द्वारा इसमें एक अन्य प्रावधान जोड़ दिया गया जिसके अनुसार एक ही व्यक्ति दो या दो से अधिक राज्यों के लिए भी राज्यपाल नियुक्त किया जा सकता है।**
- ✦ **अनुच्छेद 154** के तहत राज्य की कार्यपालिका का प्रमुख "राज्यपाल" होता है लेकिन **अनुच्छेद 163** के तहत राज्यपाल अपनी स्व-विवेक शक्तियों के अलावा सभी कार्य मंत्रिपरिषद की सलाह पर करता है अर्थात् राज्यों में राज्यपाल की स्थिति कार्यपालिका के प्रधान की होती है परंतु वास्तविक शक्ति मुख्यमंत्री के नेतृत्व में मंत्रिपरिषद में निहित होती है।
- ✦ **अनुच्छेद 155** के अनुसार राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है अर्थात् राज्यपाल की नियुक्ति के संदर्भ में राष्ट्रपति अधिपत्र (वारंट) जारी करते हैं जिसे मुख्य सचिव पढ़कर सुनाता है।

राज्यपाल की नियुक्ति का प्रावधान 'कनाडा' से लिया गया है।

संविधान लागू होने से लगाकर वर्तमान तक राज्यपाल की नियुक्ति के संबंध में कुछ परंपराएं बन गईं जो निम्न हैं-

1. संबंधित राज्य का निवासी नहीं होना चाहिए ताकि वह स्थानीय राजनीति से मुक्त रहे।
2. राज्यपाल की नियुक्ति के समय राष्ट्रपति संबंधित राज्य के मुख्यमंत्री से परामर्श ले ताकि समय दानी की व्यवस्था सुनिश्चित हो

राज्यपाल की नियुक्ति के संबंध में गठित प्रमुख आयोग व उनकी सिफारिशें -

1. सरकारिया आयोग

गठन-1983 रिपोर्ट- 1987 अध्यक्ष- रणजीत सिंह सरकारिया

सिफारिश -

- ✦ राज्यपाल ऐसे व्यक्ति को बनाया जाना चाहिए जो किसी क्षेत्र विशेष में प्रसिद्ध हो।
- ✦ राज्य के बाहर का निवासी होना चाहिए।
- ✦ राजनीतिक रूप से तटस्थ व्यक्ति होना चाहिए।
- ✦ सक्रिय राजनीति में भागीदारी नहीं ले रहा हो राज्यपाल की नियुक्ति से पूर्व राज्य के मुख्यमंत्री से परामर्श लिया जाए।
- ✦ 5 वर्ष की निश्चित पदावली हो।
- ✦ राज्यपाल को हटाए जाने से पूर्व एक बार चेतावनी देनी चाहिए अथवा पूर्व सूचना दी जानी चाहिए।

2. द्वितीय प्रशासनिक सुधार आयोग

- ✦ वर्ष 2005 में वीरप्पा मोइली (कर्नाटक के पूर्व मुख्यमंत्री) की अध्यक्षता में गठित। वर्ष 2010 में इसने अपना प्रतिवेदन दिया।

सिफारिश -

- ✦ इस आयोग के अनुसार राज्यपाल की नियुक्ति के संदर्भ में **कॉलेजियम व्यवस्था** होनी चाहिए। प्रधानमंत्री इसका अध्यक्ष होगा जबकि उपराष्ट्रपति, लोकसभा अध्यक्ष, गृहमंत्री तथा लोकसभा में विपक्ष का नेता इसके सदस्य होंगे लेकिन सुझाव स्वीकार नहीं किया गया था।

3. पूंछी आयोग

- ✦ गठन-2007 रिपोर्ट- 2010 अध्यक्ष- मदनमोहन पूंछी

सिफारिश -

- ✦ केंद्र राज्य संबंधों की जांच हेतु गठित पूंछी आयोग ने राज्यपाल को हटाने के लिए विधानमंडल में महाभियोग की प्रक्रिया अपनाने का सुझाव दिया।
- ✦ राज्यपाल को किसी भी विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति नहीं बनाना चाहिए।
- ✦ राज्य की विधानसभा में पारीत विधेयक पर राज्यपाल को 6 माह में निर्णय लेना चाहिए।

4. राजमन्नार आयोग

- ✦ गठन-1969 रिपोर्ट- 1971 अध्यक्ष- डॉ. वी.पी. राजमन्नार
- ✦ **NOTE- सरकारिया आयोग, राजमन्नार आयोग व पूंछी आयोग का सम्बन्ध राज्यपाल की नियुक्ति और केंद्र-राज्य संबंधों से है।**
- ✦ **अनुच्छेद 156** इस अनुच्छेद में राज्यपाल की पदावधि/ कार्यकाल का उल्लेख लिया गया है।
- ✦ अर्थात् राज्यपाल अपने पद ग्रहण की तारीख से 5 वर्ष तक पद पर बना रहेगा।
- ✦ राज्यपाल राष्ट्रपति के प्रसादपर्वत पद धारण करता है तथा राष्ट्रपति को संबोधित करके त्यागपत्र देता है।
- ✦ राष्ट्रपति किसी भी राज्यपाल को उसके बचे हुए कार्यकाल के लिए किसी दूसरे राज्य में स्थानांतरित कर सकता है।
- ✦ राज्यपाल को दोबारा नियुक्त किया जा सकता है।
- ✦ राज्यपाल अपने कार्यकाल के बाद भी तब तक पद पर बना रहता है जब तक उसका उत्तराधिकारी कार्य ग्रहण नहीं कर ले।
- ✦ **राज्यपाल को हटाने के आधार का उल्लेख संविधान में नहीं है।**

अनुच्छेद 157 राज्यपाल पद योग्यताएँ/ अर्हताएँ

1. वह भारत का नागरिक हो।(जन्म से आवश्यक नहीं)
2. वह 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।
3. और वह राज्य विधानमंडल का सदस्य चुने जाने योग्य हो।

अनुच्छेद 158 राज्यपाल पद की सेवा शर्तें व वेतन भत्ते

1. किसी प्रकार के लाभ के पद पर ना हो।
2. यदि संसद या विधानमंडल के किसी भी सदन का सदस्य है तो राज्यपाल का पद धारण करने की तिथि से वह पद रिक्त मान लिया जाएगा।
- ✦ राज्यपाल के वेतन भत्तों का निर्धारण संसद (संविधान की दूसरी अनुसूची में उल्लिखित) करती है।
- ✦ राज्यपाल को वेतन राज्य की संचित निधि से जबकि पेंशन भारत की संचित निधि में से दी जाती है।
- ✦ राज्यपाल का वेतन ₹350000 है जो कर मुक्त होता है।
- ✦ पदावधि के दौरान वेतन भत्तों में कमी नहीं की जा सकती है।
- ✦ यदि एक व्यक्ति दो या दो से अधिक राज्यों का राज्यपाल है (**7वें संविधान संशोधन-1956 द्वारा**) तो भी उसे वेतन 1 पद का

होगा परंतु इसका वहन राष्ट्रपति द्वारा निर्धारित अनुपात में संबंधित राज्यों द्वारा किया जाएगा।

अनुच्छेद 159 राज्यपाल पद की शपथ

- राज्यपाल या राज्यपाल पद के कार्यों का निर्वहन करने वाले व्यक्ति को राज्यपाल पद की या राज्यपाल पद के कार्य निर्वहन की शपथ **संबंधित राज्य के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश या उपस्थित वरिष्ठतम न्यायाधीश द्वारा** दिलाई जाती है **राज्यपाल संविधान के परिरक्षण, संरक्षण व प्रतिरक्षण तथा राज्य की जनता के कल्याण के शपथ लेता है।**

NOTE- राज्यपाल की शपथ का प्रारूप अनुसूची- 3 में नहीं मिलता है।

अनुच्छेद 160 कुछ आकस्मिकताओं में राज्यपाल के कर्तव्यों का निर्वहन

- राज्यपाल पद के संबंध में उत्पन्न आकस्मिक परिस्थितियों में कार्य लरने की शक्ति राष्ट्रपति द्वारा प्रदान की जाएगी जैसे- राज्यपाल पद के खाली होने पर संबंधित राज्य के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश या उपस्थित वरिष्ठतम न्यायाधीश द्वारा राज्यपाल पद का कार्यों का निर्वहन करना।

राज्यपाल के कार्य एवं शक्तियां -

1. कार्यपालिका संबंधी कार्य -

- अनुच्छेद 166** के तहत राज्य के समस्त कार्य राज्यपाल के नाम से ही किए जाते हैं अर्थात् राज्यपाल राज्य कार्यपालिका का नाममात्र का प्रमुख होता है।
- अनुच्छेद 164** के तहत राज्यपाल मुख्यमंत्री को तथा उसकी सलाह से उनकी मंत्रिपरिषद् के सदस्यों को नियुक्त करता है तथा उन्हें **पद एवं गोपनीयता** की शपथ दिलाता है।
- राज्यपाल राज्य के उच्च अधिकारियों जैसे-** अनुच्छेद 165 के तहत महाधिवक्ता, अनुच्छेद 316 के तहत राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष एवं सदस्यों की नियुक्ति करता है। (महत्वपूर्ण यह कि राज्यपाल राज्य लोक सेवा आयोग के सदस्यों को नियुक्त जरूर करता है लेकिन उनको उनके पद से हटा नहीं सकता। लोकसेवा आयोग के सदस्य राष्ट्रपति द्वारा निर्देशित किए जाने पर उच्चतम न्यायालय के प्रतिवेदन पर और कुछ निरर्हताओं के होने पर ही राष्ट्रपति द्वारा हटाए जा सकते हैं। (अनुच्छेद 317)
- अनुच्छेद 217 के तहत राज्य के उच्च न्यायालय में न्यायाधीशों की नियुक्ति के संबंध में राष्ट्रपति को परामर्श देता है।
- अनुच्छेद 233 के तहत जिला न्यायालय के न्यायाधीश की नियुक्ति राज्यपाल उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श करने के पश्चात करता है
- अनुच्छेद 167 के तहत राज्यपाल का अधिकार है कि वह राज्य की विधायी व प्रशासनिक सूचना मुख्यमंत्री से प्राप्त करें।
- अनुच्छेद 356 के तहत राष्ट्रपति शासन के समय केंद्र सरकार के एजेंट के रूप में राज्य का प्रशासन चलाता है।
- अनुच्छेद 243 K-पंचायतीराज व अनुच्छेद 243 ZA- नगर निकायों के लिए राज्य चुनाव आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है।
- अनुच्छेद 243 I-पंचायतीराज व अनुच्छेद 243 Y- नगर निकायों के लिए राज्य वित्त आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है।
- राज्यपाल सभी राज्य पोषित सरकारी विश्वविद्यालयों का कुलाधिपति होता है तथा उपकुलपतियों की नियुक्त करता है।

- राज्य सूचना आयोग, राज्य मानवाधिकार आयोग, राज्य सूचना आयोग व राज्य बाल अधिकार संरक्षण आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है। राज्यपाल **'राजस्थान रेडक्रास सोसायटी' व 'पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र- उदयपुर'** का अध्यक्ष होता है

- लोकायुक्त की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा की जाती है।

2. विधायी शक्तियां -

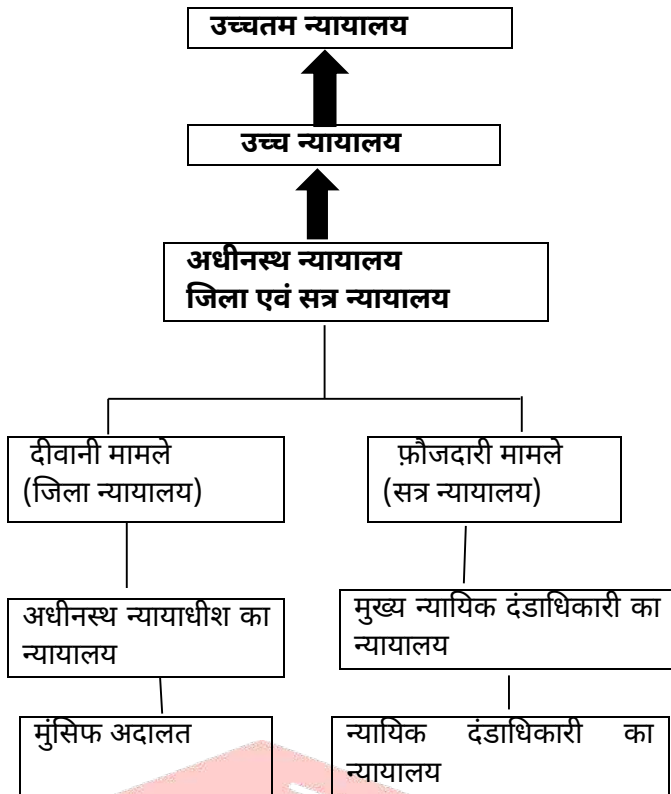
- अनुच्छेद 168** के तहत राज्य विधानमंडल में राज्यपाल, विधानसभा एवं विधानपरिषद् तीनों शामिल होते हैं अतः राज्यपाल विधान मंडल का अभिन्न अंग होता है।
- अनुच्छेद 171** के तहत जिन राज्यों में द्विसदनात्मक विधानमंडल है वहाँ पर उच्च सदन (विधानपरिषद्) में राज्यपाल 1/6 सदस्यों को मनोनीत करता है जो साहित्य, विज्ञान, कला, सहकारी आन्दोलन और समाजसेवा क्षेत्र के सामान्य जानकार या विशेषज्ञ हो।
- अनुच्छेद 174** के तहत राज्यपाल विधानसभा के सत्र को आहूत, सत्रावसान या विघटित कर सकता है।
- अनुच्छेद 176** के तहत राज्यपाल विधानमंडल के दोनों सदनों को संयुक्त रूप से संबोधित / अभिभाषण कर सकता है। (विधानसभा के चुनाव पश्चात पहली बैठक तथा प्रत्येक वर्ष के पहले सत्र को) राज्यपाल का यह अभिभाषण मंत्री परिषद् द्वारा तैयार किया जाता है।
- अनुच्छेद 180** के तहत राज्यपाल द्वारा जब विधानसभा अध्यक्ष और उपाध्यक्ष का पद रिक्त हो तब विधानसभा के किसी सदस्य को कार्यवाही सुनिश्चित करने के लिए नियुक्त कर सकता है।
- अनुच्छेद 192** के तहत राज्यपाल विधानमंडल के किसी सदस्य को चुनाव में भ्रष्टाचार के आधार पर अयोग्य घोषित कर सकता है लेकिन इस संदर्भ में राज्यपाल भारत के निर्वाचन आयोग से परामर्श करेंगे।
- अनुच्छेद 200** के तहत राज्यपाल राज्य विधान मंडल द्वारा पारित किसी विधेयक को स्वीकृति देने, एक बार पुनर्विचार के लिए वापस भेज सकता है (धन विधेयक के अलावा) या राष्ट्रपति के विचार के लिए सुरक्षित रख सकता है।

NOTE-राज्य विधानमंडल द्वारा इसे दोबारा पारित किए जाने पर वह उसपर अपनी सहमति देने के लिए बाध्य होता है।

- किसी भी विधेयक पर संवैधानिक उपबंध के तहत राज्यपाल की सिफारिश अपेक्षित थी, किन्तु बिना राज्यपाल की सिफारिश उसे राजस्थान विधानसभा में पुनः स्थापित किया गया और उसे पारित करके राज्यपाल को भेज दिया गया हो, तब यदि राज्यपाल अनुमति देता है, तो वह अधिनियम अधिमान्य नहीं होगा।
- राष्ट्रपति के लिए आरक्षित विधेयक जब राष्ट्रपति के निर्देश पर पुनर्विचार के लिए विधान मंडल को लौटा दे तो ऐसे लौटाए जाने पर विधानमंडल 6 माह के भीतर उस पर पुनर्विचार करेगा और यदि उसे पुनः पारित किया जाता है तो विधेयक राष्ट्रपति को पुनः प्रस्तुत किया जाएगा। किंतु इस पर भी राष्ट्रपति के लिए अनुमति देना अनिवार्य नहीं है। (**अनुच्छेद 201**)
- राज्यपाल किसी विधेयक को राष्ट्रपति के विचार के लिए आरक्षित रख सकता है। यह आरक्षित विधेयक तभी प्रभावी होगा जब राष्ट्रपति उसे अनुमति प्रदान करदे। राज्यपाल को राष्ट्रपति के लिए विधेयक आरक्षित करना उस समय अनिवार्य है जब विधेयक

अध्याय - 4

उच्च न्यायालय



- ✦ भारत में उच्च न्यायालय संस्था का सर्वप्रथम गठन वर्ष 1862 में कलकत्ता, बंबई और मद्रास उच्च न्यायालयों के रूप में हुआ।
- ✦ वर्ष 1866 में चौथे उच्च न्यायालय की स्थापना इलाहाबाद (प्रयागराज) में हुई।
- ✦ भारतीय संविधान के **भाग -6 के अनुच्छेद 214 से लेकर 232 तक** राज्यों के उच्च न्यायालय के संगठन एवं प्राधिकार संबंधी प्रावधानों का वर्णन किया गया है।
- ✦ **अनुच्छेद 214** के तहत प्रत्येक राज्य में एक उच्च न्यायालय होगा लेकिन **अनुच्छेद 231** के अन्तर्गत संसद को दो या दो से अधिक राज्यों के लिए एक ही उच्च न्यायालय की व्यवस्था की शक्ति प्राप्त है। (7 वें संविधान 1956 के तहत)
- ✦ **अनुच्छेद 230 के तहत** संसद कानून बनाकर किसी उच्च न्यायालय का विस्तार संघ शासित प्रदेश के लिए कर सकती है।
- ✦ पहले भारत में 21 उच्च न्यायालय थे। मार्च 2013 में मेघालय, मणिपुर एवं त्रिपुरा में नए उच्च न्यायालय स्थापित किए गए हैं।
- ✦ वर्तमान में 25 उच्च न्यायालय हैं। 25 वां उच्च न्यायालय आंध्रप्रदेश राज्य का जो 1 जनवरी, 2019 अमरावती में स्थापित हुआ है।
- ✦ केन्द्रशासित प्रदेशों में दिल्ली ऐसा संघ क्षेत्र है जिसका अपना उच्च न्यायालय (वर्ष 1966 से) है।

NOTE :- जम्मू-कश्मीर पुनर्गठन अधिनियम 2019 के तहत जम्मू-कश्मीर राज्यों को दो केन्द्रशासित प्रदेशों (जम्मू-कश्मीर व लद्दाख) में विभाजित कर दिया गया। इससे पूर्व जम्मू कश्मीर राज्य में भी उच्च न्यायालय था लेकिन इस एक्ट के लागू होने के बाद जम्मू - कश्मीर राज्य का उच्च न्यायालय जम्मू - कश्मीर केन्द्रशासित प्रदेश में यथास्थित रहेगा।

✦ निम्न संयुक्त उच्च न्यायालय है -

- (i) पंजाब, हरियाणा, चंडीगढ़ : - चंडीगढ़ उच्च न्यायालय

- (ii) महाराष्ट्र, गोवा, दमन व दीव, दादर एवं नागर हवेली- बॉम्बे उच्च न्यायालय
- (iii) असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैण्ड, मिजोरम :- गुवाहटी उच्च न्यायालय
- (iv) तमिलनाडु, पुडुचेरी : - मद्रास उच्च न्यायालय
- (v) केरल, लक्षद्वीप - एर्नाकुलम उच्च न्यायालय
- (vi) प. बंगाल, अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह:- कलकत्ता उच्च न्यायालय

गठन

- ✦ **अनुच्छेद 216** में उच्च न्यायालय के गठन का उल्लेख किया गया है। जिसमें एक मुख्य न्यायाधीश और अन्य न्यायाधीश होंगे। संविधान में न्यायाधीशों की संख्या निश्चित नहीं है। राष्ट्रपति समय-समय पर आवश्यकतानुसार न्यायाधीशों की संख्या निर्धारित करते हैं।

न्यायाधीशों की योग्यता

- ✦ अनुच्छेद 217 (2) के अनुसार कोई व्यक्ति किसी उच्च न्यायालय का न्यायाधीश नियुक्त होने के योग्य तब होगा, जब वह
- ✦ भारत का नागरिक हो।
- ✦ कम से कम 10 वर्ष तक न्यायिक पद धारण कर चुका हो। या किसी उच्च न्यायालय में एक या से अधिक उच्च न्यायालयों में लगातार 10 वर्ष तक अधिवक्ता रहा हो।

न्यायाधीशों की नियुक्ति

- ✦ उच्च न्यायालयों के न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है।
- ✦ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा भारत के मुख्य न्यायाधीश और संबंधित राज्य के राज्यपाल से परामर्श के पश्चात की जाती है।
- ✦ कॉलेजियम की अनुशंसा पर अन्य न्यायाधीशों की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। संबंधित उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश तथा उच्च न्यायालय के 2 वरिष्ठतम न्यायाधीश इस संदर्भ में पहल करते हैं।
- ✦ इनके द्वारा उच्चतम न्यायालय के कॉलेजियम (भारत का मुख्य न्यायाधीश + 4 वरिष्ठतम न्यायाधीश) के पास नाम भेजे जाते हैं। यह कॉलेजियम राष्ट्रपति को इस सन्दर्भ में अनुशंसा करते हैं।

NOTE:- 99 वें संविधान संशोधन अधिनियम 2014 तथा राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग अधिनियम 2014 द्वारा SC एवं HC के न्यायाधीशों की नियुक्ति के लिए कॉलेजियम प्रणाली की जगह राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग (NJAC) का गठन किया गया लेकिन SC ने इस संशोधन एवं अधिनियम को असंवैधानिक घोषित कर दिया। वर्तमान में कॉलेजियम व्यवस्था के तहत ही न्यायाधीशों की नियुक्ति होती है।

कार्यकारी मुख्य न्यायाधीश की नियुक्ति

- ✦ अनुच्छेद 223 के तहत जब किसी उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश का पद रिक्त हो या जब मुख्य न्यायाधीश की अनुपस्थिति के कारण या अन्यथा अपने पद के कर्तव्यों का पालन करने में असमर्थ हो, तब राष्ट्रपति न्यायालय के अन्य न्यायाधीशों में से किसी को मुख्य न्यायाधीश के कार्यों का निर्वहन करने के लिए नियुक्त कर सकता है।
- ✦ **अनुच्छेद 224** में अतिरिक्त और कार्यकारी न्यायाधीश का उल्लेख किया गया है।

- ✦ **अतिरिक्त का प्रावधान केवल उच्च न्यायालय के लिए है जबकि तदर्थ न्यायाधीश की नियुक्ति उच्च न्यायालय में नहीं की जाती ।**
 - ✦ राष्ट्रपति भारत के मुख्य न्यायाधीश से परामर्श के बाद निम्नलिखित परिस्थितियों में योग्य व्यक्तियों को उच्च न्यायालय के अतिरिक्त न्यायाधीशों के रूप में अस्थायी रूप से नियुक्त कर सकते हैं, जिसकी अवधि 2 वर्ष से अधिक नहीं होगी ।
 - (i) यदि अस्थायी रूप से उच्च न्यायालय का कामकाज बढ़ गया हो ।
 - (ii) उच्च न्यायालय में बकाया कार्य अधिक हो ।
 - ✦ राष्ट्रपति उस पारिस्थितियों में योग्य व्यक्तियों को किसी उच्च न्यायालय का कार्यकारी न्यायाधीश नियुक्त कर सकता है जब उच्च न्यायालय का न्यायाधीश (मुख्य न्यायाधीश के अलावा) अनुपस्थित या अन्य कारणों से अपने कार्यों का निष्पादन करने में असमर्थ हो तथा किसी न्यायाधीश को अस्थायी तौर पर संबंधित उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश नियुक्त किया गया हो ।
- NOTE:-** हालांकि अतिरिक्त या कार्यकारी न्यायाधीश 62 वर्ष की आयु के पश्चात पद पर नहीं रह सकता

- ✦ **अनुच्छेद 224 A (15वें संविधान संशोधन 1963)** सेवा निवृत्त न्यायाधीशों की नियुक्ति
- ✦ उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश किसी भी समय उस उच्च न्यायालय अथवा किसी अन्य उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त न्यायाधीश को अस्थायी के लिए बतौर कार्यकारी न्यायाधीश काम करने के लिए कह सकते हैं ।
- ✦ वह ऐसा राष्ट्रपति की पूर्व संस्तुति एवं संबंधित व्यक्ति की मंजूरी के बाद ही कर सकता है ।

शपथ ग्रहण

- ✦ **अनुच्छेद 219** के तहत सभी न्यायाधीशों को शपथ राज्यपाल अथवा राज्यपाल द्वारा अधिकृत किए गए व्यक्ति द्वारा दिलायी जाती है। **सभी न्यायाधीश पद तथा संविधान के प्रति निष्ठा की शपथ लेते हैं**
- ✦ उच्च न्यायालय का न्यायाधीश **तीसरी अनुसूची** के अनुसार शपथ ग्रहण -करता है ।
- ✦ **NOTE-** अनुच्छेद 220 में यह स्पष्ट उल्लिखित है कि उच्च न्यायालय का न्यायाधीश सेवानिवृत्ति के बाद उन उच्च न्यायालयों में अधिवक्ता के रूप में सेवा नहीं दे सकते हैं जहाँ उन्होंने न्यायाधीश के रूप में सेवा दी ।
- ✦ न्यायाधीशों को सेवानिवृत्ति के बाद भारत सरकार या किसी राज्य सरकार के अधीन कोई लाभ का पद भी नहीं दिया जाता है ।
- ✦ न्यायाधीश सेवानिवृत्ति के बाद चुनाव लड़ सकते हैं ।
- ✦ **उदाहरण के लिए - उत्तराखण्ड उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश विजय बहुगुणा किसी भी राज्य के पहले एवं एकमात्र मुख्यमंत्री है जो उच्च न्यायालय में न्यायाधीश भी रह चुके हैं ।**

पदावधि

संविधान में उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों का कार्यकाल निश्चित नहीं किया गया है लेकिन इस संबंध में चार प्रावधान किए गए हैं।

1. उच्च न्यायालय के न्यायाधीश की 62 वर्ष की सेवानिवृत्ति आयु होती है । (15 वें संशोधन एक्ट 1963 द्वारा सेवानिवृत्ति की आयु 60 से 62 वर्ष कर दी गई)

NOTE :- 114 वें संविधान संशोधन विधेयक के द्वारा उच्च न्यायालय के जज की सेवानिवृत्ति की आयु 62 से 65 वर्ष बढ़ाने का प्रावधान था लेकिन विधेयक पारित नहीं हुआ ।

2. राष्ट्रपति को त्यागपत्र भेज सकता है ।
3. संसद की सिफारिश से राष्ट्रपति उसे पद से हटा सकता है ।
4. उसकी नियुक्ति उच्चतम न्यायालय में न्यायाधीश के रूप में हो जाने या उसका किसी दूसरे उच्च न्यायालय में स्थानांतरण हो जाने पर वह पद छोड़ देता है ।

न्यायाधीशों को हटाना

- ✦ संविधान में न्यायाधीशों को हटाने के लिए Remoral शब्द काम में लिया गया है जिसका अर्थ है "पद से हटाना" जबकि राष्ट्रपति के लिए Impeachment शब्द काम में लिया गया है जिसका अर्थ है "महाभियोग" ।
- ✦ हटाने के दो आधार "सिद्ध कदाचार" और "अक्षमता" है ।
- ✦ उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को राष्ट्रपति के आदेश से पद से हटाया जा सकता है ।
- ✦ राष्ट्रपति न्यायाधीश को हटाने का आदेश संसद द्वारा उसी सत्र में पारित प्रस्ताव के आधार पर ही जारी कर सकता है ।
- ✦ प्रस्ताव को विशेष बहुमत के साथ संसद के प्रत्येक सदन का समर्थन (इस प्रस्ताव को उस सदन के कुल सदस्यों के बहुमत का समर्थन और उस सदन में उपस्थित और मतदान करने वाले सदस्यों के 2/3 का समर्थन) मिलना आवश्यक है ।
- ✦ इस तरह, सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश की तरह ही उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को उसी प्रक्रिया और आधारों पर हटाया जा सकता है ।

न्यायाधीश जाँच एक्ट (1968) में उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को महाभियोग की प्रक्रिया द्वारा हटाने के नियम निम्न हैं

1. यदि प्रस्ताव लोकसभा में पेश हो तो 100 सदस्यों या फिर राज्यसभा में पेश हो तो 50 सदस्यों द्वारा हस्ताक्षरित हटाने का प्रस्ताव को अध्यक्ष / सभापति को सौंपा जाएगा ।
2. अध्यक्ष / सभापति प्रस्ताव को स्वीकृत या अस्वीकृत कर सकता ।
3. यदि प्रस्ताव स्वीकृत को जाता है तो अध्यक्ष / सभापति एक समिति का गठन करेगा । समिति में उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश या कोई न्यायाधीश, किसी उच्च न्यायालय मुख्य न्यायाधीश तथा एक प्रख्यात न्यायविद होना अनिवार्य है ।
4. यदि समिति यह पाती है कि न्यायाधीश कदाचार का दोषी है या अयोग्य है तो सदन प्रस्ताव पर विचार कर सकता है ।
5. संसद के दोनों सदनों द्वारा विशेष बहुमत से प्रस्ताव पास होने के बाद न्यायाधीश को हटाने के लिए इसे राष्ट्रपति के पास भेजा जाता है ।
6. अंततः न्यायाधीश को हटाने के लिए राष्ट्रपति आदेश पारित कर देते हैं ।

इस प्रकार उच्च न्यायालय के न्यायाधीश को हटाने की प्रक्रिया उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश के समान ही है ।

NOTE:- पी.डी. दीनाकरन (कर्नाटक), सोमित्र सेन (कलकत्ता), एस. के सेंगले (जबलपुर) तथा जे. बी. पारदीवाला (गुजरात) उच्च न्यायालय के 4 ऐसे न्यायाधीश हैं जिन्हें हटाने हेतु राज्यसभा में प्रस्ताव लाया गया था ।

- ✦ दीनाकरन ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया । सेंगले के विरुद्ध गठित समिति ने आरोपों को खारिज कर दिया । पारदीवाला के विरुद्ध लाया गया प्रस्ताव लम्बित है ।

अध्याय - 10

राज्य मानवाधिकार आयोग

- मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 की धारा -21 के तहत राज्य मानवाधिकार आयोग की स्थापना का प्रावधान किया गया था। राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग साविधिक / वैधानिक निकाय है।
- यह आयोग केवल राज्य सूची तथा समवर्ती सूची के विषयों पर ही जाँच कर सकता है।
- यदि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग या अन्य कोई विधिक निकाय किसी मामले पर पहले से ही जाँच कर रहा हो तो राज्य मानवाधिकार आयोग हस्तक्षेप नहीं कर सकता है।
- वर्तमान में देश के 23 राज्यों में मानवाधिकार आयोग की स्थापना की जा चुकी है।

राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग

- राजस्थान राज्य मानवाधिकार आयोग का गठन 18 जनवरी, 1999 को जारी अध्यादेश द्वारा किया गया जिसने कार्य प्रारम्भ 23 मार्च, 2000 से किया मुख्यालय- जयपुर
- आयोग का अध्यक्ष उच्च न्यायालय का सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश ही हो 1

आयोग का संगठन

- बहुसदस्यीय निकाय है।
- 1 अध्यक्ष तथा 4 सदस्य होते हैं। (गठन के समय 1999 में)
- 1 अध्यक्ष व 2 सदस्य** (2006 में संशोधन के बाद)
- वर्तमान में अध्यक्ष गोपालकृष्ण व्यास तथा 2 सदस्य महेशचंद्र शर्मा, महेश गोयल हैं।
- योग्यता - अध्यक्ष पद हेतु** : उच्च न्यायालय का सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीश या अन्य न्यायाधीश (वर्ष 2019 में संशोधन के बाद) को अध्यक्ष बनाया जा सकता है।
- सदस्यों हेतु योग्यता** : एक सदस्य उच्च न्यायालय का सेवानिवृत्त या वर्तमान न्यायाधीश या जिला न्यायालय का सेवानिवृत्त या वर्तमान न्यायाधीश। एक सदस्य मानवाधिकारों के विशेषज्ञ।

आयोग में सदस्यों की नियुक्ति

- आयोग में सदस्यों की नियुक्ति राज्यपाल द्वारा छः सदस्यीय समिति की सिफारिश के आधार पर की जाती है।
- इस समिति का गठन निम्न प्रकार किया जाता है-
- समिति का पदेन अध्यक्ष राज्य का मुख्यमंत्री होता है।
- राज्य मंत्रिमंडल सदस्य (गृहमंत्री)।
- विधानसभा अध्यक्ष।
- विधानसभा में विपक्ष का नेता।
- विधानपरिषद सभापति। (यदि द्विसदनीय विधानमंडल है तो)
- विधानपरिषद में विपक्ष का नेता। (यदि द्विसदनीय विधानमंडल है तो)

आयोग के सदस्यों को पद मुक्त करना

- राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग के सदस्यों को पद मुक्त करने का अधिकार राष्ट्रपति को होता है, सर्वोच्च न्यायालय की जाँच के बाद

अतः पदमुक्ति के निम्न आधार हो सकते हैं-

- सिद्ध कदाचार के आधार पर।
- सदस्य को दिवालिया घोषित कर दिया गया हो।
- सदस्य ने लाभकारी पद धारण कर लिया हो।

<https://www.infusionnotes.com/>

- वह मानसिक अथवा शारीरिक रूप से अक्षम हो।

आयोग सदस्यों व अध्यक्ष का कार्यकाल

- कार्यकाल-** वर्तमान में 3 वर्ष या 70 वर्ष की आयु इनमें से जो भी पहले हो (2019 के संशोधन के बाद, इससे पूर्व 5/70 वर्ष था)। 2019 के संशोधन के बाद प्रावधान किया गया कि अध्यक्ष व सदस्य पुनर्नियुक्ति के पात्र होंगे।
- त्यागपत्र-** अध्यक्ष व सदस्य अपना त्यागपत्र राज्यपाल को देते हैं।

आयोग का कार्य

- यह एक सलाहकारी या परामर्शकारी निकाय है अर्थात् इसकी सलाह न तो राज्य सरकार और ही संबंधित अधिकारी पर बाध्यकारी है। लेकिन सरकार, आयोग को बतायेगी की रिपोर्ट पर क्या कार्यवाही की।
- मानवाधिकारों के संदर्भ में संवैधानिक व कानूनी प्रावधानों के क्रियान्वयन पर निगरानी रखना।
- गैर सरकारी संगठनों को प्रोत्साहित करना ताकि वे उचित रूप से क्षेत्र में कार्य कर सकें।
- यह किसी भी संस्था या लोकसेवकों के विरुद्ध मानवाधिकार उल्लंघन मामले की जाँच कर सकता है **लेकिन दण्ड या सजा नहीं दे सकता है।**
- मानवाधिकारों के सम्बन्ध में शोध करना एवं शोध को बढ़ावा देना।
- मानवाधिकारों से सम्बंधित शिकायतों को सुनना।
- मानवाधिकारों की जानकारी का प्रसार करना तथा जागरूकता बढ़ाना।
- आयोग गम्भीर विषयों पर स्वविवेक से भी मामलों पर संज्ञा न लेता है।
- यह राज्य की कारागारों (जेलों) व बंदीगृहों की स्थिति का निरीक्षण कर सकता है व इस बारे में सिफारिश कर सकता है।

आयोग की शक्तियाँ

- समन जारी करने की शक्ति।
- शपथ पत्र अथवा हफलनामा में पर लिखित गवाही लेने की शक्ति।
- गवाही को रिकॉर्ड करने की शक्ति।
- देश की विभिन्न जेलों का निरीक्षण करने की शक्ति।
- आयोग उन्ही मामलों में जाँच कर सकता है जिन्हें घटित हुए एक वर्ष से कम समय हुआ हो। एक वर्ष से पूर्व घटनाओं पर आयोग को कोई अधिकार नहीं है।
- आयोग मानवाधिकार उल्लंघन के दोषी को न तो दंड दे सकता है और नहीं पीड़ित को किसी प्रकार की आर्थिक सहायता कर सकता है। लेकिन इसका चरित्र न्यायिक है।
- राजस्थान मानवाधिकार आयोग **मानवाधिकार संदेश** पत्रिका प्रकाशित करता है।
- राजस्थान मानवाधिकार आयोग की पहली अध्यक्ष जस्टिस कांता भटनागर थीं।

मानवाधिकार आयोग नागरिक स्वतंत्रता कार्य

- पुलिस द्वारा गिरफ्तार करने के अधिकार के दुरुपयोग को रोकने के लिए दिशा-निर्देश।
- जिला मुख्यालय में "मानव अधिकार प्रकोष्ठ" की स्थापना।
- हिरासत में हुई मौतों, बलात्कार और मानवीय उत्पीड़न को रोकने के उपाय।
- पुलिस, जेल और नजरबन्दी केन्द्र में व्यवस्थागत सुधार।

अध्याय - 2

रासायनिक अभिक्रियाएँ और समीकरण

भौतिक परिवर्तन :-

- ✦ वह परिवर्तन, जो केवल भौतिक गुणों को प्रभावित करता है, लेकिन रासायनिक संघटक अपरिवर्तित रहते हैं, भौतिक परिवर्तन कहलाते हैं। जैसे-
- ✦ पानी का बर्फ में जमना और बर्फ का पिघलकर पानी बनना
- ✦ पानी का भाप बनना (उबलना) और भाप का वापस पानी बनना (संघनन)।
- ✦ कपूर या आयोडीन का सीधे ठोस से गैस में बदलना (ऊर्ध्वपातन)।
- ✦ कागज को फाड़ना या काटना।
- ✦ किसी धातु के तार को मोड़ना या चपटा करना।
- ✦ रबर बैंड को खींचना।
- ✦ फल को काटना (जैसे पिज्जा के टुकड़े करना)।
- ✦ पानी में चीनी या नमक घोलना,

रासायनिक परिवर्तन :-

- ✦ वह परिवर्तन, जो पदार्थ के संघटकों के साथ साथ उसके रासायनिक गुणों को प्रभावित करता है और नतीजतन एक नया रासायनिक पदार्थ बनाता है, एक रासायनिक परिवर्तन कहलाता है।
- ✦ रासायनिक परिवर्तन आम तौर पर अपरिवर्तनीय होते हैं। रासायनिक परिवर्तनों के कुछ उदाहरण मोमबत्ती का जलना (गैस), प्रकाश-संश्लेषण, फलों का पकना, पानी का विद्युत् अपघटन।
 - लोहे पर जंग लगना
 - दूध से दही बनना
 - लकड़ी या कागज का जलना
 - फलों का पकना
 - पटाखों का फूटना
 - मोमबत्ती का जलना

रासायनिक अभिक्रियाओं के प्रकार

ऊष्माक्षेपी और ऊष्माशोषी अभिक्रियाएँ

- ✦ जिन अभिक्रियाओं में उत्पादों के बनने के साथ ही ऊष्मा मुक्त होती है, ऊष्माक्षेपी अभिक्रियाएँ कहलाती हैं। ईंधन का जलना ऊष्माक्षेपी अभिक्रिया का एक उदाहरण है।
- ✦ जिन अभिक्रियाओं में ऊष्मा अवशोषित होती है, ऊष्माशोषी अभिक्रियाएँ कहलाती हैं।

ऑक्सीकरण और अपचयन -

- ऑक्सीकरण इलेक्ट्रॉनों को हटाना है।
- अपचयन इलेक्ट्रॉनों को शामिल करना है।

ऑक्सीकरण का अर्थ

- (a) ऑक्सीजन का जुड़ना
- (b) हाइड्रोजन का बाहर निकलना

अपचयन का अर्थ

- (a) ऑक्सीजन का बाहर निकलना
- (b) हाइड्रोजन का जुड़ना

- ✦ वह पदार्थ, जो ऑक्सीकरण का कारण होता है, ऑक्सीकारक कहलाता है।
- ✦ वह पदार्थ, जो अपचयन का कारण होता है, कहलाता है।

ऑक्सीकारक :-

1. इलेक्ट्रॉनों के स्वीकारकर्ता।
2. ये वह पदार्थ है, जो एक परमाणु से इलेक्ट्रॉन को निकालता है।
3. इससे ऑक्सीकरण होता है
ऑक्सीजन
पोटेशियम परमैंगनेट ($KMnO_4$)
हाइड्रोजन पेरोक्साइड (H_2O_2)
पोटेशियम डाइक्रोमेट ($K_2Cr_2O_7$)

अपचायक :-

1. इलेक्ट्रॉनों के दाता।
2. ये वह पदार्थ है, जो इलेक्ट्रॉनों को एक परमाणु में शामिल करता है।
3. इससे अपचयन होता है।
4. क्षार धातुएं जैसे **लिथियम (Li)**, **सोडियम (Na)**, और **पोटेशियम (K)** बहुत शक्तिशाली अपचायक हैं क्योंकि ये आसानी से इलेक्ट्रॉन त्याग देती हैं। **सीज़ियम (Cs)** को सबसे प्रबल अपचायक माना जाता है।

अपचयोपचय अभिक्रिया

- ✦ एक अभिक्रिया जिसमें ऑक्सीकरण और अपचयन एकसाथ होता है, अपचयोपचय अभिक्रिया कहलाती है। पौधों में प्रकाश संश्लेषण, जानवरों में भोजन का पाचन; शुष्क और आर्द्र बैटरियाँ और धातुओं का क्षरण ऑक्सीकरण और अपचयन प्रतिक्रियाओं के विविध उदाहरण हैं।

लोहे पर जंग लगना:

- ✦ विद्युत सेल (जैसे डेनियल सेल)
- ✦ सोडियम और क्लोरीन की अभिक्रिया:
- ✦ $2Na + Cl_2 \rightarrow 2NaCl$

उत्प्रेरण :-

- एक उत्प्रेरक वह पदार्थ है, जो अभिक्रिया की दर को बढ़ाता है। उत्प्रेरक स्वयं अभिक्रिया के दौरान परिवर्तित नहीं होता है।
- ऐसी घटना, जिसमें अभिक्रिया की दर एक पदार्थ (उत्प्रेरक) की उपस्थिति द्वारा बढ़ जाती है, उत्प्रेरण कहलाती है।

- मिल्क ऑफ मैग्नीशिया - 10
- सोडियम हाइड्रॉक्साइड विलयन- 14

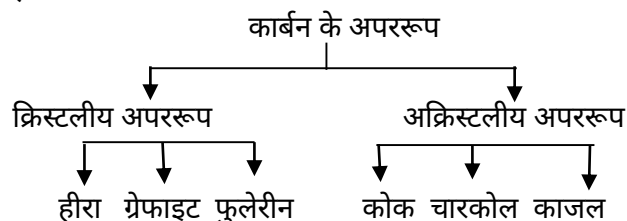
पदार्थ	pH मान
■ शुद्ध जल	7
■ समुद्री जल	8.4
■ दूध	6.4 से 6.6
■ रक्त (मनुष्य का)	7.4
■ लार (मनुष्य का)	6.5

अध्याय - 6

कार्बन और इसके यौगिक

कार्बन (Carbon)

- ★ कार्बन अधात्विक तत्व है, जो आधुनिक आवर्त सारणी में समूह-14 और आवर्त-2 में स्थित है। इसका परमाणु क्रमांक 6 तथा इलेक्ट्रॉनिक विन्यास है- $1s^2 2s^2 2p^2$ है। कार्बन सर्वाधिक यौगिकी वाला तत्व है। सभी जीव-संरचनाएँ कार्बन आधारित होती हैं। भूपर्पटी में खनिजों (जैसे- कार्बोनेट, हाइड्रोजन कार्बोनेट, कोयला, पेट्रोलियम) के रूप में 0.02 प्रतिशत कार्बन उपस्थित है। तथा वायुमंडल में 0.03 प्रतिशत कार्बन डाइऑक्साइड उपस्थित है। इसके अतिरिक्त यह सभी जीवधारियों पेड़-पौधों, चट्टानों आदि में पाया जाता है।
- ★ अपरूपता(Allotropy)- वैसे पदार्थ जिनके रासायनिक गुण समान एवं भौतिक गुण भिन्न हो 'अपरूप' कहलाते हैं, और इस घटना को 'अपरूपता' कहते हैं।
- ★ कार्बन क्रिस्टलीय तथा अक्रिस्टलीय दो अपरूपों में पाया जाता है।



हीरा(Diamond)-

- ★ हीरा ज्ञात कठोरतम पदार्थ है। इस कारण हीरे का उपयोग चट्टानों को बेधने, कठोर औजारों पर धार करने, वस्तुओं पर पॉलिश करने, टंगस्टन आदि धातुओं के तार खींचने में किया जाता है।
- ★ हीरा रासायनिक रूप से बहुत कम क्रियाशील होता है। विद्युत का कुचालक होता है।
- ★ हीरे में एक विशेष चमक उच्च अपवर्तनांक के कारण होती है। हीरे में कार्बन परमाणु की त्रिविम चतुष्फलकीय संरचना होती है। हीरे की संरचना में Sp^3 प्रकार का संकरण पाया जाता है।

ग्रेफाइट(Graphite)-

- ★ इसे काला सीसा भी कहा जाता है।
- ★ ग्रेफाइट के क्रिस्टल में कार्बन परमाणु 'समषट्भुजों की परतो' के रूप में पाए जाते हैं।
- ★ रासायनिक रूप से कम क्रियाशील तथा उच्च गलनांक होने के कारण ग्रेफाइट का उपयोग 'कूसीबिल' बनाने में किया जाता है।
- ★ ग्रेफाइट का उपयोग लेड पेंसिल बनाने में किया जाता है।
- ★ ग्रेफाइट की संरचना में Sp^2 प्रकार का संकरण पाया जाता है। परमाणु रिएक्टरों में ग्रेफाइट का उपयोग मंदक के रूप में किया जाता है।

फुलेरीन (Fullerene)-

- ★ यह कार्बन का ठोस क्रिस्टलीय रूप है। इसका अणु गोलाकार होता है, जिसमें मूलतः 60 कार्बन परमाणु होते हैं। वर्तमान में इससे अधिक कार्बन परमाणु वाले फुलेरीन की खोज हो चुकी है। जैसे- C_{70} , C_{84} , C_{90} , C_{120} आदि।
- ★ C_{60} की संरचना सबसे अधिक स्थायी होती है, जिसे बकमिन्सटर फुलर के नाम पर 'बकमिन्सटर फुलेरीन' नाम दिया गया है।
- ★ C_{60} अणु के 32 फलक होते हैं, जिनमें से 20 षट्कोणीय तथा 12 पंचकोणीय है, जो एक-दूसरे से संयुक्त रहते हैं।

- ✦ C_{60} कार्बन का एक अत्यधिक क्रियाशील रूप होता है। C_{60} की अधिक अभिक्रियाशीलता मुख्यतः $C=C$ समूह की असमतलियता के कारण होता है।

कोक (Coke)-

- ✦ यह काले भूरे रंग का ठोस होता है।
- ✦ वायु की अनुपस्थिति में कोयले के भंजक आसवन से कोक प्राप्त होता है। कोक का उपयोग इंजन, बॉयलर व भट्टियों में ईंधन की भांति होता है।
- ✦ कोक का उपयोग धातुओं के निष्कर्षण में अपचायक की भांति किया जाता है।

- ✦ **चारकोल (Charcoal)-** यह मुलायम, काला व अत्यंत छिद्रयुक्त नरम पदार्थ होता है। इसकी मुख्य तीन किस्में पाई जाती हैं-

काष्ठ चारकोल (Wood Charcoal)-

- ✦ जब लकड़ी को हवा की अपर्याप्त मात्रा में जलाया जाता है तो काष्ठ चारकोल प्राप्त होता है।
- ✦ काष्ठ चारकोल के अत्यंत छिद्रयुक्त होने के कारण इसका उपयोग 'गैस मास्क' के रूप में गैसों को अवशोषित करने में किया जाता है।

जंतु चारकोल (Animal Charcoal)-

- ✦ जंतु चारकोल में लगभग 10 प्रतिशत कार्बन होता है, इसे अस्थि कालिख भी कहा जाता है, क्योंकि यह हड्डियों के भंजक आसवन से प्राप्त होता है।
- ✦ इसका मुख्य उपयोग चीनी के विलयन को साफ़ करने में किया जाता है।

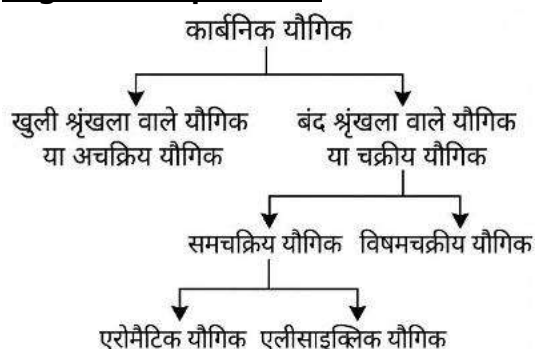
चीनी चारकोल (Sugar Charcoal)-

- ✦ यह कार्बन के असंरचनात्मक अपरूपों में से 'शुद्धतम अपरूप' होता है।
- ✦ चीनी पर सल्फ्यूरिक अम्ल (H_2SO_4) की क्रिया द्वारा इसे प्राप्त किया जाता है।
- ✦ इसका उपयोग विरंजक (Decolorizing agent) के रूप में होता है।

काजल (Lamp Black)-

- ✦ यह महीन, काले रंग का चूर्ण होता है।
- ✦ इसे केरोसिन तेल, तारपीन तेल, पेट्रोलियम आदि कार्बनयुक्त पदार्थों को जलाकर प्राप्त किया जाता है।
- ✦ काजल में लगभग 95 प्रतिशत कार्बन पाया जाता है तथा इसका उपयोग जूते की पॉलिश, प्रिंटिंग की स्याही, आँखों का काजल आदि बनाने के लिये किया जाता है।

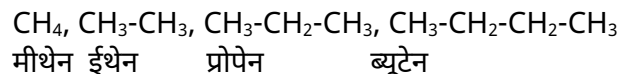
कार्बनिक यौगिकों का वर्गीकरण (Classification of Organic Compounds)-



खुली श्रृंखला वाले यौगिक (Open Chain Compounds)-

- ✦ वे कार्बनिक यौगिक, जिनमें कार्बन के सभी परमाणु आपस में एक खुली श्रृंखला में जुड़े रहते हैं, खुली श्रृंखला वाले यौगिक या अचक्रिय यौगिक या एलीफैटिक यौगिक कहलाते हैं।
- ✦ 'एलिफ़ॉस' (Aleiphas) का अर्थ वसा (Fat) होता है

उदाहरण:



- ✦ **बंद श्रृंखला वाले यौगिक (Closed chain Compounds)-** वे कार्बनिक यौगिक, जिनमें कार्बन परमाणु आपस में जुड़कर एक बंद श्रृंखला या चक्र बनाते हैं, बंद श्रृंखला वाले यौगिक या चक्रीय यौगिक कहलाते हैं।

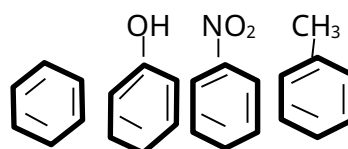
समचक्रिय यौगिक (Homocyclic Compounds)

समचक्रीय यौगिक भी दो प्रकार के होते हैं-

(a) एरोमैटिक यौगिक (Aromatic Compounds)-

- ✦ वे समचक्रिय यौगिक, जिनमें कार्बन की बंद श्रृंखला 6 कार्बन परमाणुओं द्वारा बनी होती है।

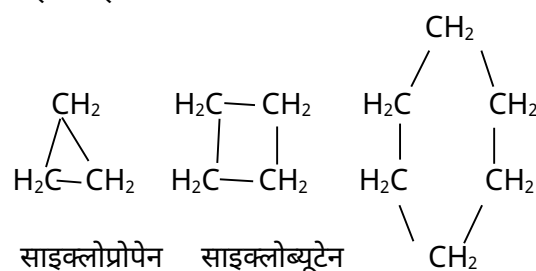
उदाहरण :



बेंजीन फीनॉल नाइट्रोबेंजीन टालुइन

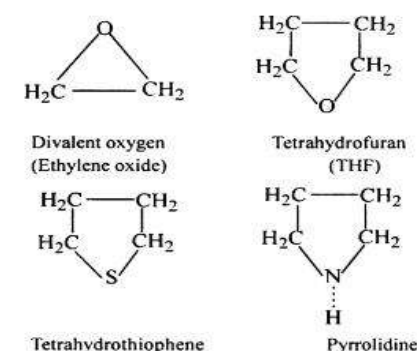
(b) एलीसाइक्लिक यौगिक (Alicyclic Compounds)-

- ✦ वे समचक्रीय यौगिक, जो एलिफैटिक यौगिकों के समान होते हैं, किन्तु एक बंद वलय बना लेते हैं, एलीसाइक्लिक यौगिक कहलाते हैं।



साइक्लोप्रोपेन साइक्लोब्यूटेन साइक्लोपेंटेन

- ✦ **विषमचक्रिय यौगिक (Heterocyclic Compounds)** वे चक्रीय यौगिक जिनके वलय में कार्बन परमाणुओं के अतिरिक्त अन्य तत्व (जैसे- N, O, S) भी पाए जाते हैं, विषमचक्रिय यौगिक कहलाते हैं।



जीव विज्ञान

अध्याय - 1

जीव विज्ञान का परिचय

- ★ जीवों को उनकी शारीरिक रचना, रूप और कार्य के अलावा अब **आनुवंशिक विकास (Evolutionary relationships)** और **DNA अनुक्रमों** के आधार पर भी वर्गीकृत किया जाता है।
- ★ **कैरोलस लीनियस**: इन्हें 'आधुनिक वर्गिकी का पिता' (**Father of Modern Taxonomy**) कहा जाता है। इन्होंने अपनी पुस्तक '**सिस्टेमा नेचुरे**' (**Systema Naturae**) में जीवों के वैज्ञानिक नामकरण के लिए '**द्वि-नाम पद्धति**' (**Binomial Nomenclature**) की शुरुआत की, जिसमें पहला नाम 'वंश' (Genus) और दूसरा 'जाति' (Species) को दर्शाता है,।
- ★ किसी भी जीव को मुख्य रूप से **सात (7)** स्तरों के पदानुक्रम में वर्गीकृत किया जाता है:
 1. **जगत (Kingdom)** - सबसे उच्च वर्ग।
 2. **संघ (Phylum)** (जंतुओं के लिए) / **प्रभाग (Division)** (पौधों के लिए)।
 3. **वर्ग (Class)**।
 4. **गण (Order)**।
 5. **कुल (Family)**।
 6. **वंश (Genus)**।
 7. **जाति (Species)** - सबसे निम्न और बुनियादी वर्ग।
- ★ **अरस्तू (Aristotle)** को '**जीव विज्ञान का जनक**' माना जाता है, जिन्होंने सर्वप्रथम जंतुओं का वर्गीकरण उनकी रचना और स्वभाव के आधार पर किया था। लीनियस ने बाद में समस्त जीवधारियों को पादप (Plantae) और जंतु (Animalia) जगत में विभाजित किया।

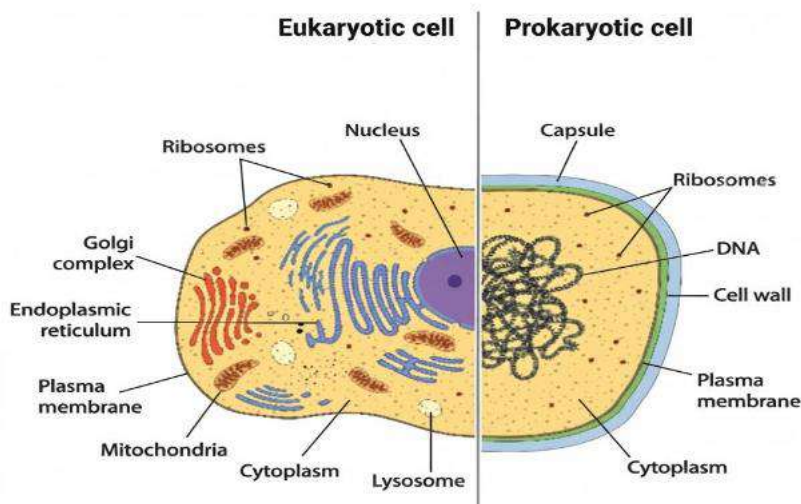
- ★ **पाँच जगत प्रणाली**: 1969 में **आर.एच. व्हिट्टकर (R.H. Whittaker)** ने पाँच जगत प्रणाली प्रस्तुत की, जिसे सर्वाधिक स्वीकार्यता मिली है। ये पाँच जगत हैं:
 8. **मोनेरा (Monera)**: एककोशिकीय, प्रोकैरियोटिक जीव (जैसे बैक्टीरिया)।
 9. **प्रोटिस्टा (Protista)**: एककोशिकीय, यूकैरियोटिक जीव (जैसे अमीबा)।
 10. **कवक (Fungi)**: यूकैरियोटिक, अधिकतर बहुकोशिकीय अपघटक।
 11. **पादप (Plantae)**: बहुकोशिकीय, स्वपोषी पौधे।
 12. **जंतु (Animalia)**: बहुकोशिकीय, परपोषी जंतु।

कोशिका (Cell)

- ★ मानव जीवन की सबसे छोटी इकाई को कोशिका कहते हैं
- ★ **कोशिका की खोज** - ब्रिटिश वैज्ञानिक **रॉबर्ट हुक** ने 1665 ई. में कोशिका की खोज की। रॉबर्ट हुक ने बोटल की कॉर्क की एक पतली परत के अध्ययन के आधार पर मधुमक्खी के छत्ते, जैसे कोष्ठ देखे और इन्हें कोशा नाम दिया। यह तथ्य उनकी पुस्तक माइक्रोग्राफिया में छपा। रॉबर्ट हुक ने कोशा - भित्तियों के आधार पर कोशा शब्द प्रयोग किया।
- ★ **वनस्पति विज्ञानशास्त्री श्लाइडेन एवं जन्तु विज्ञानशास्त्री श्वान** ने 1838-39 ई. में प्रसिद्ध कोशावाद को प्रस्तुत किया। अधिकांश कोशाएँ 0.5µm से 20µm के व्यास की होती हैं।
- ★ 1674 ई. में **एंटीनी वॉन ल्यूवेनहॉक** ने जीवित कोशा का सर्वप्रथम अध्ययन किया।
- ★ 1831 ई. में **रॉबर्ट ब्राउन** ने कोशिका में केन्द्रक का पता लगाया।
- ★ रॉबर्ट ब्राउन ने 1831 ई. में केन्द्रक की खोज की।
- ★ **शुतुर्मुर्ग** का अण्डा सबसे भारी एवं बड़ी कोशिका है।
- ★ सबसे छोटी कोशिका **माइक्रोप्लाज्मा गैलीसेटिकम (PPLO)** की होती है।

जीवों में दो प्रकार की कोशिकाएँ पाई जाती हैं

विशेषता	प्रोकैरियोटिक कोशिकाएं	यूकैरियोटिक कोशिकाएं
केंद्रक (Nucleus)	अनुपस्थित	उपस्थित (DNA केंद्रक में होता है)
अंगक	अनुपस्थित	उपस्थित (माइटोकॉन्ड्रिया, ER, आदि)
आकार	छोटा (0.1-5.0 micro m)	बड़ा (10-100 micro m)
DNA की संरचना	गोलाकार (Circular)	रेखीय (Linear)
जीव	बैक्टीरिया और आर्किया	पौधे, जानवर, कवक, प्रोटिस्ट
कोशिका विभाजन	बाइनरी विखंडन	माइटोसिस/मियोसिस



अध्याय - 6

मानव रोग

- ★ **रोग विज्ञान (Pathology)** – रोग उत्पन्न करने वाले कारकों की पहचान, उनकी संरचना व रोगों के निदान से सम्बन्धित अध्ययन।
- ★ **रोग-** सामान्य अवस्था में कोई परिवर्तन जो कि असहजता या अक्षमता या स्वास्थ्य में क्षति उत्पन्न करता है।
- ★ **स्वास्थ्य** – व्यक्ति की शारीरिक, मानसिक एवं पूर्णता बिना किसी रोग व दुर्बलता के स्वास्थ्य कहलाता है (WHO-1948) विश्व स्वास्थ्य दिवस-7 अप्रैल
- ★ **window period:-** यह संक्रमण से प्रयोगशाला में संसूचित किए जाने तक का समयान्तराल होता है।

जीवाणु जनित रोग

हैजा

- ★ जनक- विब्रियो कॉलेरी
- ★ लक्षण - लगातार उल्टी व दस्त होना, पेशाब बंद, पेट में दर्द, प्यास अधिक, हाथ पैरों में ऐठन, आँखें धस जाती हैं।
- ★ होने का कारण- गर्मी व बरसात के दिनों में फैलता है। दूषित भोजन, फल, सब्जी का सेवन तथा मक्खियों द्वारा फैलता है।
- ★ बचाव के उपाय हैजे की पेटेंट दवा नाइट्रोयूग्रेटिक अम्ल की 10 बूंदें व अमृतधारा की 5 बूंदें। नीबू का अधिक सेवन, रोगी के कपड़े को फॉर्मेलीन और कार्बोलिक अम्ल से धोकर सुखाना चाहिए।
- ★ हैजा का प्राथमिक उपचार **ORS (Oral Rehydration Solution)** और एंटीबायोटिक्स हैं।
- ★ हैजा के रोगाणु की खोज रॉबर्ट कोच ने की थी।

डिप्थीरिया या कंठ रोहिणी

- ★ जनक - कोरीनेबैक्टीरियम डिप्थीरिया (Corynebacterium diphtheriae)
- ★ लक्षण-श्वास लेने में अवरोध उत्पन्न होना। (अधिकतर बच्चों में)। संक्रमण गले में सफेद मटमैली झिल्ली बनती है वायु मार्ग अवरूद्ध, सांस में तकलीफ, तंत्रिका तंत्र प्रभावित होता है।
- ★ होने का कारण- दूषित फल-सब्जी तथा वायु द्वारा फैलता है।
- ★ बचाव के उपाय- बच्चों को डी.पी.टी. का टीका लगवाना चाहिये।
- ★ जॉच- शीक टेस्ट (schick test)
- ★ डी.पी.टी- डिप्थीरिया, टिटनेस व कुकर खाँसी (Diphtheria, Pertussis, Tetanus)

कोढ़ या कुष्ठ या हेन्सन का रोग

- ★ जनक -माइकोबैक्टीरियम लेप्री
- ★ कुष्ठ के रोगाणु का पता हेन्सन ने लगाया।
- ★ लक्षण- शरीर की त्वचा की संवेदनशीलता समाप्त हो जाती है चमड़ी में घाव पड़ जाते हैं और चमड़ी गलने लगती हैं।
- ★ होने का कारण- रोगी के अधिक सम्पर्क व मक्खियों द्वारा फैलता है।
- ★ बचाव के उपाय- एण्टीबायोटिक्स व गंधक का प्रयोग, एण्टीसेप्टिक स्नान आदि भी उपयोगी है। कुष्ठ रोग में "गंधक" (Sulphur) से अधिक प्रभावी **MDT (Multi-Drug Therapy)** है, जिसमें रिफैम्पिसिन (Rifampicin) जैसी दवाएं दी जाती हैं।
- ★ ईलाज-Multi drug therapy 1981 से शुरू।
- ★ कुष्ठ दिवस- 30 जनवरी

<https://www.infusionnotes.com/>

प्लेग (Plague)(Black death)

- ★ जनक- यर्सिनिया पेस्टिस
- ★ वाहक-पिस्सु (*Xenopsylla cheopis*) है। चूहे, गिलहरी आदि पिस्सुओं के वाहक लक्षण – बहुत तेज बुखार तथा **लिम्फ नोड्स (लसीका ग्रंथियां)** सूज जाती हैं जिन्हें गिल्टी कहा जाता है।
- ★ होने का कारण- छूत की बीमारी है, जो एक मनुष्य से दूसरे मनुष्य में फैलती है। पिस्सु के उत्सर्जी पदार्थों से बचाव के उपाय- प्लेग का इंजेक्शन लगवाना चाहिए व चूहों को घर से निकालना चाहिए।

टिटनेस या धनुस्तम्भ

- ★ जनक – क्लोस्ट्रीडियम टेटानी (*Clostridium tetani*)
- ★ लक्षण –जबड़े की मांसपेशियां सिकुड़ी हुई स्थिति में रह जाती है। सारा शरीर ऐंठन युक्त हो जाता है।
- ★ होने का कारण- जंग लगे लोहे, कांच, घोड़े की लीद या मल से जीवाणु शरीर में प्रवेश कर जाते हैं **घाव (Wounds)** के माध्यम से शरीर में प्रवेश कर रक्त के संपर्क में आते हैं और वहीं विषैला पदार्थ (Tetanotoxins) छोड़ते हैं। इनसे टिटैनी स्पाज्मोन नामक विषैला स्राव उत्पन्न होता है।
- ★ बचाव के उपाय- पेनिसिलीन तथा एंटीसीरम ATS के इंजेक्शन लगवाने चाहिए।

T.B. या तपैदिक या क्षय रोग या

यक्ष्मा या राजयक्ष्मा या सिलशोथ

- ★ जनक- माइकोबैक्टेरियम ट्यूबरकुलोसिस
- ★ टी बी की खोज – रॉबर्ट कोच 1882 लक्षण - T.B के लक्षण शरीर में संक्रमण के स्थान के अनुसार परिवर्तित होते हैं। रोगी को बार बार खाँसी के साथ कफ और खून का आना तथा लगातार वजन कम होना और कमजोर होना। शरीर की प्रतिरोधकता में कमी आने पर सक्रिय हो जाते हैं ये ट्यूबरकुलीन नामक टॉक्सीन पैदा करते हैं।
- ★ टी बी के दो विशेष स्थान हैं- 1 फेफड़ा 2 लसीका ग्रन्थि।
- ★ होने का कारण- रोगी के कफ, हवा, सम्पर्क के साथ दूसरे स्थान पर फैलता है।
- ★ बचाव के उपाय- उपचार के लिए बी.सी.जी. का टीका लगवाना चाहिए तथा स्वच्छता से रहना चाहिए।
- ★ ईलाज- Direct observation treatment short course therapy (DOTS)
- ★ जॉच- Mantoux test, 24 march-T.B. day

टायफाइड या मियादी बुखार या मोतीझरा या आन्न ज्वर

- ★ जनक – साल्मोनेला टाइफी
- ★ लक्षण –तेजी से बुखार आना जो कि सदैव बना रहता है। दोपहर बाद बुखार अधिक तेज होता है अधिक होने पर आंत में छिद्र हो जाना।
- ★ **दूषित जल और दूषित भोजन (Fecal-oral route)** से फैलता है।
- ★ बचाव के उपाय- टायफाइड का टीका लगवाना चाहिए। वर्तमान में ओरल टायफाइड वैक्सीन के रूप में उपलब्ध है। TAB टीकाकरण 3 वर्ष के लिए असंक्राम्यता प्रदान करता है। टाइफाइड ओरल वैक्सीन भी टाइफाइड की रोकथाम करती है। क्लोरमाइसेटिन औषधि।
- ★ टाइफाइड के जीवाणु का पता कार्ल जोसेफ एबर्थ ने लगाया। जॉच- विडाल टेस्ट (जार्ज फर्नांड वीडाल प्रथम 1898)